CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

9.2 v2

भाषा-साहित्य-संस्कृति-समाज आ विकास खातिर समर्पित

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

सम्पादक :
प्रो॰ ब्रजकिशोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

मई, 2004 एह अंक के दाम- दस रुपया

परामर्श मंडल

(डॉ॰) विवेकी राय, (आचार्य) विश्वनाथ सिंह, (डॉ॰) विद्यानिवास मिश्र, (श्री) मोती बी॰ ए॰, दण्डिस्वामी विमलानंद सरस्वती, (श्री) पाण्डेय कपिल, (डॉ॰) विजय बलियाटिक, (डॉ॰) अर्जुन दास केसरी, डॉ॰ प्रभुनाथ सिंह, डॉ॰ अनिल कुमार 'आंजनेय'

संपादक
प्रो॰ ब्रजकिशोर

सह संपादक
जीतेन्द्र वर्मा

संपादक मंडल
डॉ॰ रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक', राजनारायण दीक्षित, कृष्णानंद कृष्ण, सूर्यदेव पाठक 'पराग', डॉ॰ रामकिशोर श्रीवास्तव, डॉ॰ ब्रजभूषण मिश्र, भगवान सिंह 'भास्कर', व्यास मिश्र, भगवती प्रसाद द्विवेदी, रवीन्द्र शाहाबादी ।

संपादकीय संपर्क
प्रो॰ ब्रजकिशोर, श्रीभवन, प्रोफेसर कॉलोनी, महम्मदपुर लेन, महेन्द्रू पटना-6 फोन: 0612-2671180, 2669592 एक्सटेंशन-8

रचना में दिहल तथ्य, विचार रचनाकार के बा, ओसे संपादक मंडल के सहमति जरूरी नइखे ।

- सम्पादकीय/3-7
- गीत-गजल-कविता:8-9
  पाण्डेय कपिल/गंगा प्रसाद 'अरूण'/डॉ॰ राजकुमार सिंह 'कुमार' विष्णुपुरी
- कहानी
  केकरा खातिर छठ ?/
  पद्मश्री डॉ॰ शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव/10
- स्मरण
  सुनल-पढ़ल बतकही/आदित्य कुमार 'अंशु'/17
  स्मृतिशेष डॉ॰ विकल/डॉ॰ बच्चन पाठक 'सलिल'/19
- लोक-संस्कृति
  भोजपुरी लोकगीतन में धुनन के प्रधानता/ महेन्द्र सिंह 'प्रभाकर'/21
- ललित-निबन्ध:
  मंगरू ठाकुर के धरोहर/ललन प्रसाद पाण्डेय/25
- भोजपुरी व्यंग्य:
  संसद में कम्पटीशन/28
- पुस्तक-समीक्षा:
  आजु के भोजपुरी साहित्य:सुविचारित निबंधन के संग्रह/ डॉ॰ ब्रजभूषण मिश्र/30
- गतिविधि :
  आजु के भोजपुरी साहित्य के लोकार्पण/32
- सम्मेलन के कार्यसमिति के बैठक/33
- नवही कलम/अखिलेश्वर कुमार गुप्ता/34
- प्रायोजक परिचय
- चिट्ठी-पत्री/36

अ॰भा॰ भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के
वार्षिक सदस्यता शुल्क 25 रुपया सालाना
आजीवन सदस्यता शुल्क 251 रुपया

विशिष्ट आजीवन सदस्यता शुल्क 1101 रुपया

'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के
वार्षिक ग्राहक शुल्क 100 रुपया
सम्मेलन के सदस्य खातिर
वार्षिक ग्राहक शुल्क... 80 रुपया
प्रायोजक (आजीवन ग्राहक) 1000 रुपया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका
(अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मासिक पत्रिका)
श्रीभवन, महम्मदपुर लेन, महेन्द्रू, पटना-800 006

वर्ष-15 अंक-5 पूर्णांक-173 मई, 2004

सम्पादकीय

भोजपुरी के हक आ भोजपुरी क्षेत्र के सभी सांसद बन्धु

लोकसभा के चुनाव खतम हो गइल । राजग का कस के झटका लागल आ ओकर अति आत्मविश्वास ओके विपक्ष में बइठे के मजबूर कर दिहलस । कांग्रेस का नेतृत्व में गैर-भाजपा सरकार केन्द्र का सत्ता में आ गइल । डॉ॰ मनमोहन सिंह का प्रधानमंत्री के पद मिलल काहे कि श्रीमती सोनिया गाँधी अपना अन्तरात्मा के आवाज सुन के प्रधानमंत्री बने के तइयार ना भइली । सत्ता पाके भी ओकर त्याग कर दिहल आज का समय में एगो बेमिशाल घटना मानल जाई । बेशक सोनिया जी के कद काफी बढ़ गइल आ जनता का निगाह में उनका एह त्याग में भारतीयता के पुट झलक रहल बा । एगो गठबन्धन का बाद दोसर संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन के सरकार सत्ता में आइल । उम्मीद कइल जात बा कि ई सरकार जनहित के काम करी आ विकास के आम आदमी तक, गाँव-गिरान तक ले जाई । राजग का ई बात देर से सूझल रहे आ ओकर नतीजा भोगे के पड़ल । ई सरकार अगर आपुसी खींचतान आ मान-मनौवल में अझुराइल रह जाई त नतीजा आउरो बाउर होई ।

देश के सामने बहुत समस्या बा, अनेक चुनौती बा । क्षेत्रीय असन्तुलनो एगो बड़हन असंतोष के कारण बा । उत्तरभारत के ढेर हिस्सा खास कके भोजपुरी भाषी क्षेत्र गरीबी, अशिक्षा आ अविकास के मार झेल रहल बा । एह सामाजिक-आर्थिक असन्तुलन से समूचा ढाँचा चरमरा रहल बा । एही समस्यन में भाषा के सवालो जुड़ल बा । कवनो भाषा अपना क्षेत्र के जनता के आत्म-सम्मान, अस्मिता, संस्कृति आ विकास के पहिचान हवे । भोजपुरी के देश-विदेश में बोले वाला अठारह करोड़ से ज्यादा लोग बा बाकिर ओह लोग के सरकार घोर उपेक्षा करत आइल बिआ । एह से असंतोष बढ़ल जात बा । भोजपुरी भाषी सुभावे से सोझिया, सरल हृदय, मिहनती आ उदार होले । संकुचित नजरिया से ऊ लोग आज ले ना सोचल । आजादी का लड़ाई में आगे-आगे रहल । देश का कोना-कोना में जाके दोसरा राज्य-सब के बनावे- सँवारे में पसेना बहावल । बदला में आज अपमान आ जहालत मिल रहल बा । अब ई जरूरी हो गइल बा कि भोजपुरी भाषी जनता के मान-सम्मान के ख्याल कइल जाय आ ओकर वाजिब हक दिहल जाय । सहे के एगो सीमा होला आ अब ई सीमा खतम हो चुकल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बा । आगे ऊ तनिको उपेक्षा सहे के तइयार नइखे । उपेक्षा जारी रहल त एकर परिणाम देशहित में ना होई । भोजपुरी जनता के अब बात बना के पोल्हावल कठिन होई । भोजपुरी भाषा के संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल कइल आ साहित्य अकादमी से मान्यता दिहल जतने जल्दी होई, देश का हित में ओतने अच्छा होई । संप्रग सरकार एकर मरम समुझी अइसन उम्मीद बा ।

पूरा भोजपुरी क्षेत्र के चुनाव-परिणाम देख लीं कि राजग का कइसन सबक मिलल बा- चाहे ऊ बिहार राज्य के सारण, सीवान, गोपालगंज,. आरा, रोहतास, चम्पारण, बक्सर आदि होखे भा उत्तरप्रदेश के पूर्वांचल होखे । आत्मसम्मान, भाषा, संस्कृति, विकास के मामला में अगर उपेक्षा जारी रहल त फेर संप्रग का भी फल भोगे के पड़ी आ तब शायद अलग राज्य के मांग जोर पकड़ ली । एह क्षेत्र के सांसद लोग से भी निहोरा बा कि ऊ सभे तनी देह झारो आ अपना क्षेत्र के भाषा, संस्कृति, विकास का प्रति जागरूक होके रूचि लेव । चाहत रहे कि ई सभे संसद में भोजपुरिये में शपथ लित । श्री रघुनाथ झा जी के एह बात खातिर सम्मेलन का तरफ से बहुत-बहुत बधाई कि एह बात के उठवले आ भोजपुरी में शपथ लेवे के मांग कइले । सभी सांसद लोग अइसनके कइलें रहित त शायद स्पीकर पर दबाव बढ़ित आ पूरा संसद का एह बारे में सोचे के पड़ित । आठवीं अनुसूची में शामिल करे के प्रस्ताव बिहार विधानसभा पारित कर चुकल बा । अब गेंदा संसद का पाला में बा । हमनी उम्मीद करत बानी कि सभी दल के भोजपुरिया सांसद लोग भोजपुरी भाषा आ भोजपुरी क्षेत्र के विकास का सवाल पर एकजुट होके जोर लगाई आ वाजिब हक हासिल करी । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन भोजपुरी क्षेत्र के सभी सांसद लोग के जीत के बधाई देत भोजपुरी का हक के इयाद दिला रहल बा ।

● भोजपुरी आ राजनीति

भोजपुरी सम्मेलन के संगठन मंत्री रंजन कुमार का अपना बम्बई से दिल्ली यात्रा में राजधानी से आवत भाजपा सांसद डॉ॰ विजय सोनकर शास्त्री (वाराणसी) से भेंट भइल । फर्स्ट ए.सी. के ओह कुप्पा में ईहे दू जना यात्री रहे लोग त आपुरू में खूब बतकही भइल । एही में भोजपुरी भाषा के भी सवाल उठल । राजनीतिज्ञ लोग के अपना भाषा आ क्षेत्र के विकास का प्रति अरूचि आ उपेक्षा भाव के बातो आइल । एपर सोनकर जी कहलीं- 'हम चाहत बानी कि भोजपुरी खातिर कुछ करीं । एकरा से जुड़ल लोग जब कवनो आयोजन करेला त भरसक राजनीति से जुड़ल लोग के ना बोलावे । कुछ महीना पहिले एगो सम्मेलन रहे, सांसद प्रभुनाथ सिंह जी चरचा कइलें त निमंत्रण नाहियो रहला पर हम जाये के तइयार हो गइलीं मने-मने बाकिर कुछ बाझ हो गइल' आ हम ना जा सकलीं । अब हम एह दिशा में सक्रिय रूप से काम करब ।'

सांसद सोनकर जी के बात कुछ हद ले सही बा । पिछला संसद में सांसद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रभुनाथ सिंह जोर लगवले रहस बाकिर आउर साथी सांसद लोगन के पूरा सहयोग ना मिलला से सरकार पर ठीक से दवाब ना बन पावल आ भोजपुरी आठवीं अनुसूची में शामिल ना हो सकल । कुछ भोजपुरिया नेता लोग का अपना राष्ट्रीय छवि के भूत ढेर सतावेला आ ऐन मोका पर ऊ लोग ऊटपटांग बात बोल के काम गड़बड़ा देला । एह संसद में एह दिसाईं एकजुट होके आ जम के काम होखे के चाहीं । सम्मेलन क्षेत्र के सभी सांसद आ सरकार में शामिल मंत्री लोग से आग्रह करी, लिखित आग्रह करी कि ऊ लोग सक्रिय होके ई काम करो ।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन 1973 से ही अपना के राजनीति से अलग रखलस आ खाली साहित्य के लेखन-प्रकाशन पर जोर दिहलस । नतीजा सामने बा । आज साहित्य के कवनो विधा में काफी संख्या में छपल किताब उपलब्ध बा आ एकर भंडार हर साल भरत जात बा । आज कवनो भारतीय भाषा का आगा भोजपुरी अनइस नइखे । सरकारी उपेक्षा आ संसाधन के घोर अभाव का बादो हर साल सौ-सवा सौ किताब छप रहल बाड़ी स । बाकिर आज समय आ गइल बा कि भोजपुरी आन्दोलन से जुड़ल लोग अब शुद्ध साहित्यिक-सांस्कृतिक चेतना के प्रसार का संगे राजनीतिक जागरूकता के भी अपनावो । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन अपना पछिला उनीसवाँ अधिवेशन में ई प्रस्ताव पारित कके राजनीति से परहेज ना राखे के संकल्प लिहलस । अब आन्दोलन के राजनीतिक तेवर भी दिहल जाई आ कोशिश होई कि भोजपुरी क्षेत्र के सभी सांसद आ एम. एल. ए. लोग के भी जोड़ल जाव । सम्मेलन के सक्रिय सदस्य भोजपुरी क्षेत्र का अलावा सऊँसे देश में बाड़न । एह संप्रग सरकारो में भोजपुरी भाषी अनेक मंत्री लोग बा । ओह सबके सहयोग मिली, अइसन उम्मीद बा । जे भोजपुरी भाषा के समर्थन करी, ओह सब के निर्मंत्रित करके आन्दोलन के रूपरेखा बनी । डॉ. सोनकर शास्त्री जी के शिकाइत दूर हो जाई आ समय पर नेंवता भेजल जाई । श्री लालू प्रसाद, श्री प्रभुनाथ सिंह, श्री रघुनाथ झा, वगैरह सभी बिहारी आ पूर्वांचल के सांसद लोग से सहयोग के सम्मेलन उम्मीद करत बा ।

● हीन भावना कइसन ?

भोजपुरी के सवाल हमनी का पहिचान से जुड़ल बा, भविष्य से जुड़ल बा । आपन बोली आपन बोली ह । एह में जवन मिठास होला, जवन प्रेम आ अपनत्व होला, ऊ दोसरा भाषा से ना मिल सके । एही से केहू बहरवासु का कान में जब अपना बोली के आवाज पड़ेला त ऊ अगरा जाला आ झटक के बोलेवाला का लगे पहुँच के हर तरह के मदद करे खातिर तइयार हो जाला । शिक्षाशास्त्री लोग एक सुर में मातृभाषा के शिक्षा के सर्वोत्तम माध्यम मानेला । अपना भाषा में पढ़ल हर बात सोझे दिल-दिमाग में उतर जाला । सरकार का एह दिसाईं सोचे के पड़ी कि भोजपुरी के मातृभाषा मानल जाय आ संविधान के अनुसूची में शामिल करके रोजी-रोटी से एके जोड़ल जाय । भोजपुरी एम.ए. तक पढ़ावल जा रहल बा आ एह में ज्ञान-विज्ञान के कवनो बात के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहज ढंग से लिखल-पढ़ल जा सकेला । भोजपुरी महतारी के दूध का संगे अनयासे सहज रूप में आदमी सीख लेला - हिन्दी-अंग्रेजी भा आउर दोसर कवनो भाषा जतन से सीखे के पड़ेला । ई सहजता हर मातृभाषा का जवरे बनल रहेले ।

भोजपुरी में अब भरपूर शिष्ट साहित्य बा आ रोज आ रहल बा । अब ई निखालिस गँवई नइखे रह गइलि । एह से जे लोग का मन में अपना मातृभाषा के लेके यदि कवनो तरह के हीन भावना होखे, ओकरा के निकाल के बाहर फेंक दीं । पदाधिकारी, नेता आ पढुआ-लिखुआ लोग एही भावना से आपुस में भोजपुरी में ना बतिआवे । जब दूगो बंगाली, तमिल, कन्नड़ लोग मिलेला त चट से अपना बोली में बतिआवे लागेला- बेहिचक, बेझिझक । हमनियो का भोजपुरी बोले-बतिआये के चाहीं । घर- में, बाहर में । एह से आपुसी लगाव बढ़ी आ आपन पहिचान बनल रही । आदमी कतहीं रही, अपना जड़ से जुड़ल रही । दोसर-दोसर भाषा सीखीं, बोलीं, लिखीं बाकिर अपना बोली के तिरस्कार मत करीं । अपना क्षेत्रीय भाव के पुष्ट कइल आज के समय के मांग बा । एही से राष्ट्रीय भाव के भी पुष्टि होई । स्व॰ प्रिंसिपल मनोरंजन जी का शब्दन में कहल जाय त-

पढुआ लिखुआ करीहें माफ, हम तऽ बात कहीले साफ
ई हमार हऽ आपन बोली, सुनि जनि करे केहू ठिठोली !

अपना के पहिचानीं, अपना अस्मिता आ संस्कृति के पहिचानीं । भोजपुरी हमनी का विकास के राह प्रशस्त करी, क्षेत्र के विकास के राह बनाई । ना त खुद एकर उपेक्षा करीं, ना दोसरा के करे दीं ।

● किसान आ गाँव के सवाल

भारत गाँवन के देश ह । महात्मा गाँधी का सपना के भारत के आत्मा गाँव में बसेले । गाँव के विकास जबले ना होई, भारत के विकास सम्भव नइखे । आजादी के लड़ाई का जमाना से किसान के जगावे आ पैदावार के उचित मूल्य दिलवावे खातिर आवाज उठावल गइल । स्वामी सहजानन्द सरस्वती के किसान आन्दोलन से जमीन्दारन के जोर-जुलुम त खतम भइल बाकिर आजादी का बाद किसान के पूछवैया केहू ना रह गइल । किसान मेहनत से फसल उगवलस, अनाज के पैदावार बढ़ल, आयात का जगे अनाज के निर्यात होखे लागल । अनाज से भंडार भरल बा तबहूँ किसान के आमदनी घटत गइल । खेती के लागत बढ़त गइल । उपकरण, खाद, बीज, डीजल-सबके दाम कई गुना बढ़ गइल । एह अनुपात में अनाज के दाम ना बढ़ल । नतीजा भइल कि किसान करजा में डूब गइल आ भूखमरी के मार झेले लागल । आत्महत्या के अलावा ओकरा लगे कवनो दोसर राह ना बाँच गइल । आय के ढेर हिस्सा फेरू खेती में लाग जाला आ जिनगी के गाड़ी ठीक से चलावे लायक बचत ना हो पावे । किसान ना नीमन घर बना पावे, ना बाल-बुतरू के ठीक से पढ़ा-लिखा पावे, ना रोग-बलाय भइला पर नींकतरे इलाजे करा पावे । हालत अतना दयनीय आ लाचारी के हो गइल बा कि ऊ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
अपना के नोकरिहा आ बैपार-पेशा वाला जमात का सोझा दीन-हीन आ बवना बूझे लागल बा । एगो समय रहे कि **'उत्तम खेती मध्यम बान, नीच चाकरी, भीख निदान'** मानल जात रहे आ आज बेचारा किसान बैपार आ चाकरी खातिर घर-दुआर छोड़ के बहरवासु बने ला मजबूर हो रहल बा ।

आज एक से पाँच एकड़ जोत वाला किसान अस्सी प्रतिशत बाड़े । छोट जोत आ महँगाई दूनू जान मरले बा । ना पूँजी के व्यवस्था बा, ना सिंचाई के । ना ठीक से खाद मिलत बा, ना बीज । किसान के बेटा खेत-खरिहान से मुँह मोड़ के दू जून के रोटी के जुगुत बइठावे खातिर नगर-महानगर किओर भाग रहल बा आ उहवाँ महमूली मजूरी कके काम चला रहल बा । लोग खेत बेंच के बेटा के पढ़ा रहल बा आ सन्तान लायक हो गइला पर नोकरी करे दूर चल जात बा । कुछ दिन ले गाँव-घर इयाद रहत बा- गाहे-बिगाहे ऊ गाँवे आइयो जात बा बाकिर जिनगी के संघर्ष में अझुरा के आ बाल-बच्चा के पढ़ावे-लिखावे का चक्कर में अइसन फँसत बा कि बाकी सभ बिसर जात बा आ ऊ अनतहीं बस जात बा । प्रतिभा के पलायन से दिन-पर-दिन गाँव उदास होत जात बा । गाँवन में ना ठीक से सड़क बा, ना स्कूल, ना अस्पताल । खेत में काम कम भइला से भुखमरी से उबरे खातिर जे जवान भा अधेड़ मजूरा बाड़े ऊहो शहर भाग रहल बाड़े । नतीजा होत बा कि जवन खेत बा ओहू में काम करेवाला हाथ नइखे रह जात । जे लोग गाँव में बाँच जात बा ऊ लोग कवनो रोजगारो नइखे कर पावत काहे कि या त सड़क नइखे, भा बड़लो बा त कवनो काम के ना । आवाजाही का दिक्कत से छोट-मोट रोजगारो नइखे चल पावत । ओपर से शहर के सभ अवगुन आसानी सें गाँवन में पसरल जात बा । मानसिकता सामन्ती बा । शादी-बिआह आ रीति-रिवाज के पालन करे में करजा एक हाली माथा पर चढ़ जाता त उतरे के नाँवे नइखे लेत । मोटा-मोटी इहे हाल बा गाँव के, आ गाँव में रहेवाला किसान के । कृषि आ किसान उपेक्षा के पीड़ा झेल रहल बा । किसान-आन्दोलन कमजोर पड़ चुकल बा आ गाँव में संस्कार, भाव आ विचार के जे पवित्रता रहे, ऊहो नष्ट हो रहल बा । किसान आ गाँव के लोग जाति आ जमात में फँस गइल बा । जे किसान अनाज पैदा करके लोग के पेट भर रहल बा, मीठ फल आ सुन्दर फल उगा रहल बा का ऊ अपना बीच से नेता नइखे पैदा कर सकत ? जबले ओकरा दुख-दरद के बूझे वाला नेता ओकरे बीच से पैदा ना होई, किसान के जिनगी ना सँवर सकी । अपने बीच से स्थापित कइल नेता ओकरा खातिर संघर्ष कर सकत बा, ओकरा सम्मान के वापस दिला सकत बा । किसान चाहे कवनो राज्य के होखे, ऊ जबले संगठित होके अपना विकास आ खुशहाली खातिर ना जूझी, अइसहीं दुख-तकलीफ झेलत रही । किसान आ गाँव अइसहीं बदहाल रही त भारत के सोगहग विकास कइसे हो पाई ? बिना गाँव के विकास के देश के विकास के कल्पना बेमानी बा । किसान का आ गाँव का खुद जागे के पड़ी, आगे बढ़े के पड़ी, संघर्ष करे के पड़ी आ अपना भाषा-संस्कृति आ खेत-खरिहान के जोगावे के पड़ी । ई खाली सम्मान के सवाल नइखे, बलुक जिनगी के सवाल बा ।

-ब्रजकिशोर

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका/मई 2004/7

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुढ़वा-बुढ़िया

❑ पाण्डेय कपिल

बुढ़वा-बुढ़िया हमनी दुनू परानी जी
अपना गिरिही में हमनी खुश बानी जी

पेंशन पाके हम भइलीं मन के राजा
बुढ़िया भइली हमरा घर के रानी जी

रानीजी देखस घर के दुखड़ा-धंधा
अउर सम्हारस भोरे-साँझ चुहानी जी

करत रहीले हम दिन-रात मटरगस्ती
दोस्त-महिम का साथे काटी चानी जी

धिया-पुता परिवार सँगे बाहर बाड़े
पेरत जिनिगी के कोल्हू के घानी जी

जब-तब फोन करेलेसन नाती-पोता
अगराली बतिया के दादी-नानी जी

सब अपना में खुश बाटे, हमहूँ बानी
जिनिगी में नइखे कवनो हलकानी जी

जबले देह चलत बा हमनी दूनू के
तबले गह-गह करी हमार पलानी जी

नइखे मालुम जे दोसर के का होई
जब एगो मउअत के चद्दर तानी जी

❖ -मार्ग-3, इन्द्रपुरी पटना-24

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नवगीत

❑ गंगा प्रसाद 'अरूण'

"अनकर अरजन पर अगराइल
लहसत धूम-धड़ाका बोले
का-का बोली हो मोर बचवा"
-काका बोले ।

"सुघरी रहल कुँआर
दुआरे ठहरे के दो देला हों ?
सुरसतिया से मुँह फेरले
सब लछिमिनियाँ के चेला हो ।
माड़ो से पसरल मसान तक
सगरो टन-टन टाका बोले ।"

"एने चले ठिठोली
ओने गोली के बरसात हो ।
साँझ-सकारे मउवत के
कब मिल जाई सौगात हो !
गाँव-नगर, नुक्कड़-चौराहे
जमल खून के थाका बोले ।"

"गइल जमाना मीठा-पानी
प्रेम भरल पकवान हो ।
बोतल-पाउच बन्द इहाँ अब
जन-जन के भगवान हो ।
महुआ के मस्ती में मातल
सँउसे ससुर इलाका बोले ।"

"जे रहले रखवार
कि ओकरे से डर जादे बाटे हो ।
रूप-रूपैया-रंगदारी के
हिरदय से सब साटे हो ।
कोट-कचहरी थाना जा ना
चोर-सिपाही-नाका बोले ।"

"सभे लालची हीत-हितारो
चाहत पेरल-गारल हो ।
बेटी-पूत-भतीजा-भाई
सब स्वारथ के मारल हो ।
गाढ़-सकेता आँख फेर ले
चान-सुरूज के चाका बोले ।"

❖ -एल-4/21 रोड नं०-17, टेल्को नगर, जमशेदपुर-831004

नवगीत

❑ डॉ० राजकुमार सिंह 'कुमार' विष्णुपुरी

भोरे बढ़ियाय सांझे ओरियाय
अइसन जिनिगिया जियल ना जाय ।
उगते किरिनिया बिहँसे धरतिया
चिड़ई चुरूँगवा के बिलसत जिनिगिया
घाम लगते बदन कुम्हिलाय
अइसन जिनिगिया जियल ना जाय ।
खेते-खेते उपजल मटर सरसइया
मोजरे अमिया कोंचियाय महुइया
भोरे अँगना गिधवा मेंड़राय
अइसन जिनिगिया जियल ना जाय ।
दिन नाही चैन रात नाहीं चैन
मनवा रहत हरपल बेचैन
कागा के टर्र-टर्र ना हमके सोहाय
अइसन जिनिगियां जियल ना जाय ।

❖ -विष्णुपुरा, गुलटेनगंज, सारण (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी

केकरा खातिर छठ ?

❑ पद्मश्री डॉ॰ शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव

प्रबोधजी आठ साल से बाहरे बाड़न । छपरा से बी.एस.सी. पास करके दिल्ली गइलन, उहँई से एम.एस.सी. कइलन, एम.बी.ए. कइलन और उहँई एगो बड़का कम्पनी में नौकरी हो गइल । उहँई बिआहो हो गइल, बिहारे के एगो कलक्टर साहब के पी.ए. के बेटी से । शानदार बिआह भइल, खूब ताम-झाम से । लइकी जस नाम तस गुन-निर्मला । गोर, लमछर, एम.ए. पास, गावे में एक नम्बर, आ घर के कामकाज में एकदम फिट । नोकरी मिलत रहे, बाकी साफ इंकार कर दिहलस । ओकर कहनाम रहे कि जवन मेहरारू दिन भर नोकरी करेली, ओकर बाल-बच्चा बरबाद हो जाला, घर घर ना रह जाय । घर में रहेवाला दाई-नोकर त अंब मिले ना, बड़-बुजुर्ग केहू साथे रहे ना, त के देखी लइकन के ? पहिले वाला जमाना त बा ना कि आठगो-दसगो बाल-बच्चा में एकाध गो बिगड़ियों जाव, त कवनो खास फरक ना पड़त रहे । अब त एक, ना त हद् से हद दू, बस ! कवनो बिगड़ गइल, त घर-खानदान सब सोगहग साफ ।

सखी-सहेली, अड़ोसिन-पड़ोसिन बहुत समझवली कि दिल्ली में एक बेकत के कमाई से घर ना चली, आज ना बिहान, नोकरी खोजहीं के पड़ी, बाकी निर्मला ना मनली, त ना मनली । अब तक बिआह के सात बरिस हो गइल । लइका एक्के गो भइल-एक बरिस के भीतरे । पाँच साल इन्तजार करके ऑपरेशन करा लेली । उनका जिनगी के अकास में सूरज जस चमके, उनकर अकेला दुलरूआ । नामो रखली- "रवि प्रकाश ।"

प्रबोधजी त आठे बजे घरे से निकल जालन, लौटत-लौटत रात में कहियो साढ़े आठ, कहियो नौ । एतवारो के दिन चार-पाँच घंटा जाहीं पड़ेला । ई मल्टीनेशनल कम्पनियन के त इहे हाल बा । पइसा त देवेलीसन् हुमच के, बाकी काम में बखलोइया छोड़ा देवेलीसन् । ना टिफिन, ना लंच, उहँई आफिसे में टेबुले पर पैकेट पहुँचा दी, एक बजे के बाद । खाए के अलगा से कौनो टाइम नइखे । खातो रहीं, आ कामो करत रहीं । मुँह में कौर बा त का फोन आ जाई, त बतियावहीं के पड़ी, कभी फैक्स आ जाई, कभी ई-मेल आ जाई, कभी देस से, कभी विदेस से । खाए के बेरा अरबस के कुछ ना कुछ अइबे करी । भोजन के ना कवनो टाइम बा, ना कवनो महत्त्व बा । कइसहूँ मुँह में कुछ ठूँस लेवे के बा । एक्के डिब्बा में दही, चटनी, सब्जी सब घोर-मट्ठा । कुछ देर के बाद भुला जाला कि का खइलीं, का पिअनीं । रात में भी अगर नौ बजे के बाद अफसर रोक लिहलस, त फेर ओइसहीं डब्बा आ जाई । दिनभर जे बाहर पेराई, ऊ लड़िका के कब पढ़ाई, का लिखाई । ऑफिस से चूर होके लौटला के बाद होस रहेला ? के ने मेहरारू, केन्ने बेटा ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रवि के बस त छौ बजे भोरहीं आ जाला, आ डेढ़ बजे दिन में पहुँचा देवेला । रात में त शायदे कभी ऊ प्रबोधजी के आवे तक जागल रहेला । बाप-बेटा के खेलत-बतियावत शायदे कोई देखले होई । ओकर पढ़ाई-लिखाई, खेलकूद, बर-बेमारी, सब जिम्मेवारी बस मतारी पर ।

धन्न बाड़ी निर्मला । आजकल अइसन मेहरारू खोजला-ढुँढ़ला से ना मिली, जे बेटा खातिर आपन सौक-सिंगार, सैर-सपाटा, क्लब-सिनेमा, पार्टी-सार्टी छोड़-छाड़ के ओकरे नींने जागे, ओकरे नींने सूते । जगलो में बेटा, सपनों में बेटा । जइसे कवनो मूर्तिकार छेनी-हथौड़ी-नहरनी से एगो पत्थर के कई-कई बरस ले पीट-पाट के, छेद-छाद के, सहेज-सँवार के, एगो देवमूर्ति तराशेला, ओइसहीं ऊ रोज बेटा के तराशेली ।

भोरहरी उठला से लेके रात के ग्यारह बजे ले, बस रवि, रवि, रवि । रवि के टिफिन, रवि के जूता पालिस, रवि के टाई, रवि के बैग, लौटला पर रवि के खाना, सूतना, खेल, जलपान, खानां, अलमारी, एक-एक चीज के चिन्ता । आपन सब अरमान ऊ एगो बेटा से पूरा कर लेवे के चाहत रही । एक दिन स्कूल में नागा ना होखे के चाहीं, एक दिन होमवर्क ना गड़बड़ाए के चाहीं । हर समय इम्तहान के बात, नम्बर के बात, फस्ट आवे के बात ।

निर्मला ई सब एह से करत रही, काहे कि उनकर हार्दिक इच्छा रहे कि बेटा आई.ए.एस. अफसर हो जाय, कलक्टर हो जाय । उनकर बाबूजी कलक्टर के पी.ए. होके रिटायर कइले रहन । उनका से ऊ रोज साहेब के, मेमसाहेब के किस्सा-कहानी सुनले रही । तबे से उनका दिमाग में घुस गइल कि कलक्टरी कवनो नोकरी ना ह, बादशाहत ह । पूरा जिला में ओकरा मर्जी के बिना पतई ना हिले । करोड़न के मिल्कियत । जेकरा जे कह दी, ओकरा ऊ करहीं पड़ी । गाड़ी-सवारी, चर-चपरासी, अफरात । रोज फूल-माला, मिठाई, डिनर । कवनो विभाग के कोई अफसर होखे कलक्टर के सामने सभे छोट हो जाला । जहाँ चाही सड़क बनवा दी, जहाँ चाही स्कूल खोलवा दी, जे मन में आई, से करी । बड़का बंगला, बगान, खानसामा । एकरा से जादे सुख कहाँ होई, कवना नोकरी में होई ? तीन साल जे कलक्टर रह जाई, ओकर तीन पुश्त तर जाई । बाबूजी त कलक्टर के पी.ए. होके एतना शान से रहनीं, सब बेटियन के बढ़िया शादी कइनीं, कवनो बिआह में नौ लाख से कम ना खर्चा भइल । एगो बेटी के बिआह करे में आउर लोग के कचूमर निकल जाला, उहाँ के पाँच-पाँच बेटी के शान से विदा कइनीं । नाता-रिश्ता में कोई उनकर मुकाबला करेवाला ना भइल । बाबूजी मरे के बेरा इहे आशीर्वाद दे गइनीं- "नीरू, बेटा के कलक्टर जरूर बनइह । हम परलोक से सब सुख देख के प्रसन्न होखब । आत्मा जुरा जाई । हमार नाती जरूर कलक्टर बनी ।"

बाबूजी के आशीर्वाद आ आपन हुलास, दूनों के सहारे ऊ बेटा के गढ़े में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रात-दिन लागल बाड़ी । भगवान जरूर उनकर सुनिहन । उबले त लच्छन अच्छे बा । मतारी के मन लायक बन रहल बा बेटा । "हैपी स्कूल" में नाम लिखाइल मामूली बात बा ? टेस्ट भइल, माई-बाप के इटरव्यू भइल, शुरू में सत्तर हजार रुपया जमा करे के पड़ल आ महीना में सब मिला के बतीस सौ रुपया लाग जाला । ऊपर से टयूशन, कपड़ा-लत्ता, जूता-मोजा, आइसक्रीम, बर्गरह । धरलीं पचास हजार रुपया साल ।

स्कूल बा कि देखनिहार के धरनिहार लागी । एयर कंडीशन बिल्डिंग, एकदम झकाझक । टीचरन के देख के लागेला कि आजे लन्दन से आइल बाड़ी सन् । एक्को शब्द कोनो दोसर बोली के केहू ना बोले । बस फटाफट्ट अंग्रेजी । अइसे त निर्मलो एम.ए. पास बाड़ी, बाकी ओकनी के अंग्रेजी सुन के त लागेला कि ऊ महामूरख बाड़ी । कहाँ मोतिहारी के कन्या विद्यालय के अंग्रेजी, कहाँ कान्बेंट के अंग्रेजी । मोतिहारी वाली टीचर लदर फादर । ना सिस्टर, ना मदर । एकदम से माईजी-मोटकरी । ईहाँ त तरह-तरह के खेल, रंग-बिरंग के खेलौना, कम्प्यूटर, इंटरनेट, का नइखे उहाँ । एक-एक लड़िका के रिपोर्ट कार्ड में ओकर पूरा हुलिया लिखल रहेला । "हैपी स्कूल" के टीचर, स्मार्ट, चुहचुह, चले में खटाखट, बोले में फटाफट । हँसे, मुस्काय, हल्लो, हाय के तौर-तरीका । एह वातावरण में त लड़िका साहेब बनबे करी । आऊर-चीजन में भले दू पइसा कटौती हो जाव, लेकिन लइकन के जरूर अंग्रेजी स्कूल में, ठाट-बाट के वातावरण में रख के पढ़ावे के चाहीं, ना त माई-बाप के गलती से, कंजूसी से, लड़िका बकलोल निकल जाई, त सब चउपट । खानदान त लड़िके से जानल जाला ।

ए स्कूल में कवनो लड़िका महीना में तीन दिन से जादे अगर गैरहाजिर हो जाई, त ओकरा माई-बाप के बोला के कारण पूछल जाला, बीमारी होखी त डाक्टरी सर्टिफिकेट देवे के पड़ी । हर महीना में क्लास में इम्तहान होला, कवनो इम्तहान छूट जाई, त गार्जियन के बोला के "धोलइया" होई । हाफ इंयरली टूट जाई, त सालाना में बइठहीं ना दी । चारों ओर से चाँक चढ़ा के सोझ कइले रहेली सन् । अइसन स्कूल में बड़ा भाग से, चाहे बड़की पैरबिए से कोई के घुसे के मोका मिलेला । प्रबोधजी भी मनेमन खुश रहेलन कि उनकर बेटा आगे बढ़ रहल बा, और उनका कवनो झंझट-खटखट नइखे । सब निर्मला सँभारेली ।

बाकी एक दिन इहे स्कूल लेके बड़का झंझट हो गइल । घरे से माई के फोन आ गइल कि "अबकी छठ में तू लोग पूरा परिवार आव । अबकी हमं छठ बइठा देब । अब पार नइखे लागत । पोता के मनता रहे, सात छठ कै । अब पूरा हो गइल । एह छठ में बबुआ के आवल जरूरी बा ।" प्रबोधजी हुँ-हाँ क के सुन लेहलन, आ कहलन कि "ठीक बा, हम कांल्ह फोन क के बताइब, कि का कइसे प्रोग्राम बनी ।" सोचे लगलन कि छठ में आवे-जावे के मतलब बा कम से कम आठ दिन के छुट्टी आवाजाही, पबनी-परब, भेंट-मुलाकात सब मिला के । आपन छुट्टी के त जोगाड़ अपनहीं करे के पड़ी, लेकिन रवि के स्कूल के छुट्टी खातिर न निर्मला से कहे पड़ी ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्कूल के काम त ऊहे करेली । जे घरी फोन आइल, निर्मला आपन कवनो सहेली के घरे गइल रही, अब त राते में बात होई ।

ऑफिस से प्रबोधजी ओ दिन साते बजे लौट अइलन । आके, नहा-धोके, खा-पी के, अब बिछौना पर गइलन त तनी-मनी हँसी-मजाक के बाद निर्मला के देह पर हाथ धके खूब पोल्हा के बतवलन "भोरे माई के फोन आइल रहे, छठ में सबके बोलवले बाड़ी, बबुआ के मानता के छठ बा, एह साल बइठावे के बा, एह से ओकरा लेके चले के बा, जइसे तू कहबू ओइसहीं प्रोग्राम बनीं ।" एन्ने बात पूरा भइल, ओन्ने एकदम झनाक से प्रबोधजी के हाथ टेर के निर्मला गरजे लगली "बबुआ कइसे जाई, आठ दिन स्कूल छोड़ के । ओकर त नामे कट जाई । एतना दिन से हम दिन-रात ओकर जोग-जतन में एही खातिर लागल बानी कि ओकर नामे कट जाय । रउआ जाए के बा, त जाईं, हम त ना बेटा के छोड़ के जाइब, ना बेटा के लेके जाइब । छठ त हर साल आई-जाई, छठ के नाम पर हम बेटा के जिन्दगी खराब कर दीं ?" प्रबोध जी बोरसी पर छींटा मारे के कोशिश कइलन- "ना-ना, हमार ई मतलब ना रहे । होई त ऊहे जे तूँ कहबू, लेकिन माई के कइसे समझावल जाय । छठ के नाम पर कुछ उल्टा-सीधा कहे में भी त डर लागेला । तू कवनो बाहर के त बाड़ू ना, तोहरा त ठीक से मालूम बा कि बिहार में छठ के नाम पर....."

निर्मला फुफकारे लगली- "हमरा सब मालूम बा । छठी मइया थोड़े कहिहें कि उनका नाम पर कवनो लड़िका के जिन्दगी बरबाद हो जाय । पूजा-पाठ, दान-पुन्न आदमी बाले-बच्चा खातिर नू करेला ? लइका के मुरूख बना के, पूजा कइला से कवनो देवी-देवता प्रसन्न ना होइहें । हम ना माई के पूजा से रोकतानी, ना रउआ के जाए से, लेकिन हम अपना बेटा के भविष्य पानी में डुबावे खातिर तइयार नइखीं । कान खोल के सुन लीं । आठ दिन ऊ कवनो हालत से बाहर ना जा सके, "हैपी स्कूल" बा, उहाँ कवनो लटर-पटर ना चली ।"

प्रबोधजी- "त एकर मतलब कि कुच्छो हो जाई, त ऊ ना जा सके । मान ल कि माई के मृत्यु हो जाय, त ऊ श्राद्धो में ना जाई, ओमे त तेरह दिन के लफड़ा लागेला ।" निर्मला- "ठीक कहतानी कि ऊ ना जा सके । अइसे आजकल दिल्ली में त घरे-घरे तीने दिन में श्राद्ध हो जाला । तेरह दिन वाला श्राद्ध खातिर त राउरो कम्पनी मुश्किले से छुट्टी दी । देखीं, समय के हिसाब से सब कुछ बदलेला, सबके बदले पड़ेला । लकीर के फकीर बनला से एह जमाना में काम ना चली । अरे, ई सब रीति-रिवाज तब बनल रहे, जब सभे एक्के जगह, एक्के साथ रहत रहे । अब बाप कहीं, मतारी कहीं, बेटा कहीं, बेटी कहीं, भाई कहीं, भौजाई कहीं । सब के काम-धाम, सबके दूरी, सबके मजबूरी । रउआ खुद समझे के चाहीं, आ माई के समझावे के चाहीं ।"

-"एही से आउर जरूरी बा कि साल में एकधो बार त परिवार के लोग घरे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जुटो, एक दूसरा के चीन्हों, पहचानो । ना त कवनो सम्बन्धे ना रह जाइ । छठ में त हमनी....."

-"सुनीं । दिल्ली में बिहारी लोग के छोड़ के आउर लोग त छठ ना करे । त ओकनी के नाता-रिश्ता, घर-परिवार कइसे चलेला ? कोई छठ ना करी त का होई ? बिदेश के त बाते छोड़ दीं, इहईं जे बड़का-बड़का लोग बा, ओमे केतना लोग किहाँ छठ होला ? राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, उपप्रधानमंत्री, सोनिया गांधी, जयललिता, जार्ज फर्नांडीस, कैबिनेट सेक्रेट्री, अम्बानी, टाटा, बिड़ला, केकरा इहाँ छठ होला ? ओकनी किहाँ कवन चीज के कमी बा ? ई सब आपन-आपन विश्वास बा, सब मन मनला के बात ह । सँउसे दुनिया आज एतना-तरक्की कर रहल बिआ, बिना छठे कइले । बिहार में एतना छठ होला, आ उहाँ जेतना गरीबी बा, अशिक्षा बा, बेकारी बा, लुच्चई बा, ओतना त आउर कहीं नइखे ।"

-देखऽ । जादे फटर-फटर मत करऽ । एम.ए. का पास कर गइलू कि सब ग्यान तोहरे हो गइल । सब देश में, सब जाति में आपन-आपन धर्म-संस्कृति, रीति-रिवाज बा, कोई कुछ छोड़े के तइयार नइखे । बड़का वकील बनल बाड़ी अंग्रेजी स्कूल के, तनी कह के देखऽत कि क्रिसमस के छुट्टी ना होखे के चाहीं, स्कूल खोल के पढ़ाव । ओकनी के तोहार बात मान लिहेसन ? उनकर "गुड फ्राइडे" होखे के चाहीं, "न्यू ईयर" होखे के चाहीं । ओमें हिन्दू, मुसलमान सबके छुट्टी चाहीं, उत्सव मनावे के चाहीं, लेकिन हमन के आपन परब-त्योहार छोड़ देवे के चाहीं, आपन परिवार, आपन रीति-रिवाज, आपन संस्कृति सब छोड़ देवे के चाहीं । जब तोहरे दिमाग के ई हाल बा, त लड़िका के हम का समझाईं ? हम जनतीं कि एह स्कूल में नाम लिखवला से ई दिन आई, कि हमरा अपना माई के बात काटे के पड़ी, अपना पत्नी से बेटा खातिर बकझक करे के पड़ी, आ हमार बेटा हमरा से, आ अपना परिवार से टूट के अलग हो जाई, त हम ओकर नामे ना लिखवतीं ।"

-"राउर बेटा रउआ से के छीनता ? पढ़-लिख के बड़का आदमी बनी, त बाप के नाम दोसर बताई ? रउआ कलक्टर-कमिश्नर के बाप बन के गर्व के अनुभव ना करब ? मतारी के नाम केतना आदमी पूछेला, केतना आदमी जानेला ।। हम जे कुछ कर रहल बानी, कह रहल बानी, रउरे नाम-जस खातिर, रउअे खानदान के नाम ऊजागिर करे खातिर । एक दिन माई के जरूर बुरा लागी, लेकिन ऊहो ठंढा के सोचिहें, त समझिहें कि दुल्हिन ठीके कइलीं ।"

-"वाह रे दुल्हिन । खूब सास के खेयाल कर रहल बाड़ू ? बनाव बेटा के कलक्टर कमिश्नर, दादी बइठल रहिहें देखे के । अरे हमनी के रहब कि ना, एकरे कवनो ठेकान नइखे । बात अबहीं के बा, दस-बीस साल आगे का होई, के जानता ?"

-"रउआ लेखा सोचे, तब त आदमी बाल-बच्चा खातिर कुछ करबे ना करे ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

–''अरे तोहरे बाल-बच्चा बा ? हमहूँ त कहू के बच्चा बानी ? हमार माई कभी सोचले होई कि हमार बेटा, आ ओकर बेटा उनका से एतना दूर हो जाई , कि बोलवलो पर झाँकी ना पाड़ी ? धन्न बाडू तू, आ धन्न बा 'हैपी स्कूल ।' एतना अनहैपी त हम कभी ना भइल रहीं ।''

–''बड़बड़ाईं जन । एकसुर्रा लेखा सोचला से काम ना चले । रउआ माई खातिर एतना सोचतानी, त जेकरा पैदा कइनी, ओकरो खातिर त सोचीं । माई के एतना चिन्ता, आ बेटा के भविष्य के कवनो चिन्ते ना । मतारी-बाप बेटा-बेटी के चिन्ता ना करी, त दोसर के करी ? आजकल के जमाना में दोसरा के ना कवनो रूचि बा, ना टाइम बा । आपन परिवार के ख्याल अपने करे पड़ेला ।

–''परिवार । परिवार । परिवार का होला ? खाली मेहरारू आ बाल-बच्चा, बस । एतने ? अरे माई-बाप भी परिवारे होला । बिना माई-बाप के परिवार ? बिना जड़ के पेड़, पत्ती, छाया ? फूल-पत्ती के चिन्ता आ जड़ के कवनो फिकरे ना । गजब सोंच बा ।''

–''देखीं, शान्त होखीं । बहस करब, त राउर ब्लड-प्रेशर बढ़ जाई । दोसर तमाशा लाग जाई । हम चाय बनावतानी ।'' कहके निर्मला चल गइली चाय बनावे, आ प्रबोधजी आँख बन्द क के सोफा पर लेट गइले । अब उनका मुंह से कवनो आवाजे ना निकले । दस मिनट के बाद निर्मला चाय ले के अइली ।

–''उठीं चाय !''

प्रबोध जी चुप्प ।

–अरे ठंढा नू हो जाई, सुन तानी ?

प्रबोधजी चुप्प । आँख बन्द ।

निर्मला देह धर के हिलवली । देह पसीना से तर-ब-तर । ऊ घबड़ा गइली । मातृत्व भाव दब गइल, पत्नी भाव जाग गइल । अब का करीं ? दिल्ली में त घरे बोलवला पर कवनो डाक्टर अइबे ना करसन् । अब त अस्पताले ले जायके होई । केकरा बोलाईं । के मदद करी ? दिल्ली में कोई के फुर्सत बा ? के साथ जाई ?

कुछ ना सूझल, त निर्मला फोन से एगो टैक्सी बोलइली । कइसहूँ लाद-लूद के एमर्जेन्सी में ले गइली । उहाँ डाक्टर देख-उख के कहलक कि ''माइल्ड हार्ट-अटैक है । इन्टेन्सिव केयर में रखना होगा ।'' प्रबोधजी भर्ती हो गइलन । चौबीस घंटा के बाद डाक्टर कहलस कि ''चिन्ता मत कीजिए । ठीक हो जायेंगे ।'' दू दिन में निर्मला के तीनों लोक लउके लागल । बेटा भी स्कूल ना गइल । के तैयार करीत, के पहुँचाइत ? इंटेसिव केयर में त कोई के रहे ना देवे, बाहरे बइठ के रोवस ।

प्रबोधजी जब बाहर अइलन, त निर्मला के इशारा से बोला के कहलन ''रवि ।'' ऊ रवि के बोला के उनका लगे खड़ा करा देली । बेटा के माथा पर हाथ रख के रोए लगलन । कोई कुछ ना बोलल ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

घरे लौट के निर्मला से एतने कहलन कि "माई के फोन कर द कि हमार तबियत ठीक नइखे, हम छठ में ना आ सकेब ।" निर्मला कुछ ना बोललीं । आज्ञाकारिणी पत्नी लेखा घरे फोन कर देहली । माई पूछत रह गइली कि "का भइल बा ? कइसे एतना तबियत खराब हो गइल ?" निर्मला कुछ ना बतवली, खाली एतने कहली- "सब ठीक बा।"

माई दोसरे दिन श्रमजीवी से चल दिहली । एकरा पहिले कबहिओं अकेले दिल्ली ना गइल रही । ओ दिन पता ना कहाँ से उनका में एतना हिम्मत आ गइल, एतना फुर्ती आ गइल । दू दिन बाद खरना रहे । अपने टिकट कटवली, अपने स्टेशन से तिपहिया पकड़के प्रबोधजी के घरे पहुँच गइली । माई के देख के प्रबोधजी बिछौना पर से उठ गइलन, आ गोर पकड़ के रोवे लगलन । कोई कुछ ना बोलल । सब कुछ बोलिए के समझावल जाय, ई कवनो जरूरी थोड़े होला । बूढ़-पुरनिया लोग के भले बहुत किताब पढ़े ना आवे, कम्प्यूटर चलावे ना आवे, बाकी आदमी के पढ़े आवेला, असली बात ताड़ जाय के गजब बुद्धि होला । बेटा के आँसू, बहू के चुप्पी आ रवि के सकपकाहट देख के, उनका बेटा के बीमारी के पूरा अन्दाज लाग गइल ।

अगिला दिन प्रबोध जी माई से खाली एतने पूछलन "आज त खरना बा नू, का-का इन्तजाम करे के बा- निर्मला के बता दीह, हम त अभी बाहर जाय लायक नइखीं ।"

माई कहली- "कुछ नइखे करे के । अब छठ ना होई । हम सुरूज भगवान से माफी मांग लेनीं । छठ बइठा देलीं छट्ठी मइया से प्रार्थना कइलीं कि हमरा से, चाहे हमरा परिवार से कवनो गलती भइल होखे त छमा करीह । तू ठीक हो जा, बहू के सोहाग बनल रहो, रवि सूरज लेखा चमकत रहसं, बस ! अब काहे खातिर छठ, केकरा खातिर छठ ? भगवान सजाय दीहें त हमरे नू दीहें, तू लोग खुश रह, जीअ, बाल-बच्चा के उन्नति होत रहो । हमरा अब केतना दिन रहे के बा ?"

माई बोलत रही, त सभे चुप रहे । बोलल खतम भइल त रोअे लगली । बस, बिना कोई के कुछ कहले, रवि आके दादी के गोदी में बइठ गइल आ लागल उनकर लोर पोंछे । एक्को मिनट ना भइल होई कि दादी ओकरा अंकवारि में भर के हँसे लगली ।

ऊपर सूरज भगवान भी हँसे लगलन ।

-एम-2/11, 10ई, राजेन्द्र नगर, पटना-16
दूरभाष: 0612-2672349

❖

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुनल-पढ़ल बतकही

❑ आदित्य कुमार 'अंशु'

हमार पिताजी डॉ॰ राम सेवक 'विकल' के जनम उत्तर प्रदेश के बलिया जिला के इसारी सलेमपुर गाँव के एगो मध्यमवर्गीय परिवार में 1 जुलाई सन् 1939 के भइल रहे। घर के सब बेकतिन के धार्मिक आ सांत्विक विचार रहे आ सभ लरिकन के इहे बतावल रहे कि सभन लोग के अपनी मेहनत के कमाई से पढ़े के बा। हमार पिता डॉ॰ 'विकल' जी अपने ही गाँव में प्राथमिक शिक्षा पवलीं आ सतीशचन्द कॉलेज बलिया से बी. ए. कइला के बाद उहाँ का 1958 में वकालत के पढ़ाई शुरू कइलीं बाकिर वकालत में मन ना लागल आ नौकरी खोजे खातिर जमशेदपुर आ गइलीं। इहाँ पर गाँव के कुछ लोग रहत रहे आ उहाँ के बड़का भाई भी रहत रहस। कई जगह घुमला-फिरला के बाद सन् 1959 में हल्दीपोखर के गिरिभारती उच्च विद्यालय में शिक्षक के पद पर नियुक्ति हो गइल। हल्दीपोखर में ही शिक्षण कार्य के साथ-साथ राँची विश्वविद्यालय से एम. ए. के डिग्री हासिल कइलीं।

साहित्यिक अभिरुचि उहाँ में पहिलहीं से रहे आ उहवाँ गइला पर स्व॰ तड़ित बसु जी से दिशा-निर्देश मिलला पर उहाँ में निखार आ गइल। स्व॰ तड़ित जी के परामर्श पर राँची विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. के डिग्री **''प्रसाद और द्विजेन्द्र लाल राय के नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन''** विषय पर मिलल। एगो शिक्षक के साथ-साथ साहित्यकार होखला के नाते उहाँ के साहित्यकार लोगन से भेंट हरदम होखे लागल। डॉ॰ सलिल जी अइसन मित्र आ स्व॰ गंगा प्रसाद 'कौशल' जी अइसन लोग के संरक्षण मिले लागल। जमेशदपुर नगरी लौह नगरी के साथ-साथ साहित्यकार मनीषी लोगन से भरल-पूरल नगरी हउवे। डॉ॰ 'विकल' जी अपना गाँव इसारी सलेमपुर में सन् 1962 में एगो साहित्यिक संस्था ''साहित्य कला संगम'' के नाँव से बनवलीं आ ओकरा अधीन आपन कइगो किताब प्रकाशित कइके हरदम जीवन्त रखले रहनी। बाकिर 'साहित्य कला संगम' के विस्तार ना हो पावल।

गीता के श्लोक पढ़त-पढ़त उहाँ के मन में विचार आइल कि एह ग्रन्थ के भोजपुरी में अनुवाद हो जाई त भोजपुरी बोले वाला भी पढ़ -समझ सकी आ उहाँ के सन् 1964 से सन् 1968 के बीच गीता के भोजपुरी पद्यानुवाद कइके 'गीता भोजपुरी' नाम से पुस्तक प्रकाशित करवनी जेवन एगो अमर कृति हो गइल बा। उहाँ के भोजपुरी-हिन्दी के कईगो पुस्तकन के सम्पादन कइले बानी आ कई संस्थन के स्थायी अवरी सक्रिय सदस्य रहलीं। उहाँ के भोजपुरी साहित्य परिषद् जमशेदपुर के अध्यक्ष भी रहल बानी आ ''जमशेदपुर विश्वकर्मा स्मारिका'' के भी सम्पादन कइले बानीं। भोजपुरी, हिन्दी पत्र-पत्रिकन में लौह मजदूर, आजाद मजदूर, लौह कुंज, त्रिवेणी धारा,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मानवी, उदित वाणी, बलिया समाचार, बलि सत्ता, 'क' आंचलिक, देशभक्त, आदिवासी, सन्मार्ग, नालन्दा दर्पण, आज, दैनिक सन्मार्ग, रेलवे हिन्दी मंच, आइना, हिन्दुस्तान, लुकार, भोजपुरी माटी, विश्वकर्मा स्मारिका, भोजपुरी परिवार में रचना छपत रहली स । जमशेदपुर रेडियो स्टेशन से काव्य पाठ, संस्मरण के प्रसारण हरदम समय-समय पर होत रहे । उहाँ के साहित्यिक कृतियन में बिखरे फूल, श्रृंगार गीत, देश गीत, रवीन्द्र मानस, 'मेरी साहित्य साधना' (1955 से 1988 तक के काव्य ग्रन्थ कई खण्ड में), कर्मवीर, कमलाकान्त, डूबे हुए भाई बहन, नाटक अमर कृति बा । उहाँ के हल्दीपोखर विद्यालय के रंगमंच पर निर्देशन कइले बानी आ अपने लिखल नाटक कमलाकान्त में अभिनय भी कइले रहनी । युग की मांग, शोषण बन्द करो, बाप का आदर्श बेटा, परिवर्तन, खुदा की देन, शादी की भूख, मां की आँखें, जादूगर एकांकी प्रकाशित भइल बा । एकरा अलावे प्रेमचन्द की कहानियों की समीक्षा, संस्कृत अनुवादिका, भोजपुरी गीता, फूल और कलियाँ, सर्वोदय सुमन, आशा-किरण, आदि कई पुस्तकन के सम्पादन कइले रहनी । भोजपुरी में मनपाखी, गाईं गीत सुनाईं गीत, नवरतन, देवचरित काव्य, उघटा पुरान, गीतांजलि (रवीन्द्रनाथ की कृति के अनुवाद), कहानी-संग्रह, आलोचनात्मक निबन्ध संग्रह, संस्मरण, हमार भोजपुरी सेवा (कई खण्ड में) अमर कृति बा ।

30 जून सन् 1999 के उहाँ का हल्दीपोखर विद्यालय से सेवा निवृत्त हो गइलीं । अवकाश के बाद जमशेदपुर के साहित्यिक आ सामाजिक संस्थन के द्वारा उहाँ के विदाई अवरी सम्मान समारोह भइल रहे । आपन पेंशन वाला काम करावे खातिर उहाँ के बागबेडा में किराया के मकान लेके रहनी आ आपन काम करवलीं । पेंशन हो गइला पर अपने पैतृक गाँव सलेमपुर, बलिया आके रहे लगलीं बाकिर जमशेदपुर वाला साहित्यिक महौल ना मिलला से उहाँ के चिन्तित रहे लगलीं आ कुछ पइसा के भी परेशानी हो गइला से कुछ ज्यादा सोचे लगलीं । लिखे पढ़े वाला काम हरदम एगो परीक्षार्थी जइसन करत रहीं । एह बीच कहानी, कविता, संस्मरण अवरी दर्जनों लेख लिख के डायरी में रखले बानी । पुरी के यात्रा कई बार कइला से उहाँ के मन में जगन्नाथपुराण नाम से एगो पुस्तक लिखे के बिचार भइल आ 'जगन्नाथपुराण' नाम से खण्ड काव्य लिखले बानी बाकिर खण्ड काव्य के तीन भाग पूरा हो सकल बा, चउथका भाग गद्य में रफ कॉपी बा । एगो अवरी धार्मिक ग्रन्थ 'पुराण पुरुष' गद्य में लिखत रहनी । पुराण पुरुष में वैदिक काल से लेके आधुनिक काल तक जेतने महत्वपूर्ण लोग रहले उनकर कइसे जनम भइल आ ओकर धार्मिक कारण का रहल, इहे वर्णित बा ! वैदिककाल से महाभारत काल तक लिख के रफ कर देले बानी, बाकिर इहो पुस्तक पूरा ना हो सकल । उहाँ के मन रहे कि अगर ई दूनो पुस्तक छप जाई त साहित्य में मील के पत्थर होई ।

11 नवम्बर सन् 2002 के उहाँ के हृदयगति रुकला से देहान्त हो गइल । ढेर चिन्ता आ साहित्यिक माहौल ना मिलला से उहाँ के बहुत कम समय तक हमहन के बीच रह पवलीं । ❖

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्मृतिशेष डॉ॰ विकल

❑ डॉ॰ बच्चन पाठक 'सलिल'

भाई राम सेवक 'विकल' के निधन से हमार एगो अइसन मित्र के साथ छुटि गइल जेकरा से पछिला चालीस साल से घनिष्ठता रहे । बंधु के परिभाषा बतावल गइल बा-

उत्सवे व्यसने चैव, दुर्भिक्षे राष्ट्र विप्लवे ।
राजद्वारे श्मशाने च, यः तिष्ठति स वान्धव : ।

हमनी एहमें कइगो शर्त के पालन कइलीं । विकल जी के देहान्त उनका गाँव में (इसारी सलेमपुर, बलिया) में भइल । हम जमशेदपुर में रहलीं । सूचना एक महीना बाद मिलल । एह से श्मशान में साथ देवे के मोका ना मिलल ।

डॉ॰ राम सेवक 'विकल' हिन्दी, संस्कृत आ बंगला के विद्वान रहले । भोजपुरी के एगो समर्पित साधक रहले । गीता के भोजपुरी अनुवाद कइले रहले, आ बहुत आकर्षक ढंग से कवि सम्मेलन में ओकर पाठ करसु । जमशेदपुर का अलावे उड़ीसा आ बंगाल के कवि-सम्मेलनन में कम से कम पचास बार हमनी जरूर भाग लेले होखब । विकल जी हिन्दी कविता के साथ गीता के भोजपुरी अनुवाद आ अन्य भोजपुरी कविता जब सस्वर पढ़सु, तब गैर- भोजपुरियो प्रभावित हो जासु ।

विकल जी 1960 से लगभग 99 तक गिरिभारती स्कूल हल्दीपोखर में हिन्दी शिक्षक रहले । ई बंगला भाषा माध्यम के विद्यालय ह । बी. ए. पास करि के विकल जी ओहिजा गइले । ओहिजा रहि के बंगला भाषा के अभ्यास कइले । बंगला में कवितो लिखे लगले । एम. ए., डिप्.इन.एड., पी-एच. डी. के उपाधि एगो देहाती स्कूल में रहि के प्राप्त करे वाला विकल जी कतना विद्याव्यसनी रहले, एकर सहज अनुमान कइल जा सकेला । उनका शोध के विषय रहे- 'प्रसाद और द्विजेन्द्र लाल राय के नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन ।'

हम जमशेदपुर में महिला कॉलेज में 35 साल पढवलीं । प्रायः हर अतवार के हमनी के भेंट होखे । चाहे ऊ जमशेदपुर आवस, चाहे हम हल्दी पोखर चलि जाईं । विकल जी नाटककारो रहले । बंगला के एगो नाटक के अनुवाद कइले -''डूबे हुए भाई बहन ।'' पुस्तक छपल, बिकल आ कई जगह मंचनो भइल ।

विकल जी हल्दी पोखर में एगो इन्टर कॉलेज खोललेे-. छोटा नागपुर कॉलेज । एकर प्राचार्यो रहले । आज ई कॉलेज अपना भवन में बा आ झारखण्ड के एगो प्रतिष्ठित कॉलेज बा । विकल जी सेवानिवृत्त होखें के बेर राजकीयकृत गिरिभारती स्कूल के प्रधानाध्यापक रहले ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विकल जी के रुचि साहित्य, समाज सेवा आ अध्यात्म में रहे । ऊ हाता के गुरुकुंल आश्रम आ माताजी आश्रम से जुड़ल रहले । भोजपुरी साहित्य परिषद् जादूगोड़ा के ऊ आजीवन अध्यक्ष रहले ।

विकल जी के कई बार मान-सम्मान मिलल । निखिल भारत बंग साहित्य सम्मेलन उनका के मथुरा नाथ पुरस्कार दिहलस । सेवा सदन पुस्तकालय से राजनाथ राय सम्मान मिलल । जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् तथा सिंहभूम जिला भोजपुरी समाज से उनकर अभिनंदन भइल । पतरातू (हजारीबाग) आ रायरंगपुर (उड़ीसा) में डॉ॰ विकल के साहित्यिक सम्मान कइल गइल ।

हमरा संपादन में भोजपुरी पत्र 'जनता ललकार (1972-90) निकलत रहे । विकल जी के सहयोग आ मार्ग दर्शन हमेशा मिलल ।

गिरिभारती एगो आदर्श स्कूल ह । ओहिजा बंगला संस्कृति मूर्तिमन्त बा । सुन्दरम् रंगमंच आ गुरुगृह ओहिजा के विशेषता ह । विकल जी एह धरोहर के अपना काल में खूबे रक्षा कइले ।

विकल जी के हमरा ऊपर हरदम स्नेह रहल । गिरिभारती या पोटको अंचल में या नवोदय विद्यालय में कई गो समारोहन में हमरा के मुख्य अतिथि का रूप में बोलवले ।

जब विनोवा भावे जमशेदपुर आइल रहले, हमरा आ विकल जी के संपादन में एगो कविता संकलन प्रकाशित भइल 'सर्वोदय सुमन ।' हमनी दुनो मित्र साथे विनोवा जी के भेंट कइलीं ।

विनोबा जी विनोद में पूछले- "तू विकल क्यों हो गया ?"

विकल जी तुरंते कहले- *राम की सेवा के लिए ।*

कवि- सम्मेलन में हम उनकर परिचय दीं-

"सिंहभूम के जनपद में, है एक छोटा ग्राम ।
हाता के समीप है , हल्दी पोखर नाम ।
नाले वहाँ कई बहते हैं, कविवर विकल वहीं रहतें हैं ।

हमरा जीवन में कइगो मित्र अइले, ढेर लेखक आ विद्वान से भेंट भइल, बाकिर जवन सरलता आ आत्मीयता विकल जी से मिलल, ऊ कहीं और ना मिलल । चालीस साल में हमनी में कबो कहा-सुनी ना भइल ।

जून 2003 में हम सातवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन में भाग लेबे भारत सरकार के प्रतिनिधि का रूप में सूरीनाम (लैटिन अमेरिका) गइलीं । हवाई जहाज में बार-बार याद आवे- अगर विकल जी साथ में रहिते..... ।

-अध्यक्ष, काव्यलोक, डी'रामदास भट्ठा, जमशेदपुर-1

❖

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी लोक गीतन में धुनन के प्रधानता

❑ महेन्द्र सिंह 'प्रभाकर'

भारत में अनेक बोलियन के प्रचलन बा । पहिले के बिहार में भोजपुरी मैथिली, मगही, अंगिका, संथाली, मुंडरी अवरू हो आदि बोलियन के लोक गीत गावल जाला । अकेले भोजपुरी के पाँच गो रूप बतलावल बा जइसे शुद्ध भोजपुरी, पश्चिमी भोजपुरी, नागपुरिया, मधेसी अवरू थारू । इहनी के गीतन में विभिन्न लोक धुनन के प्रधानता बा । लोक-गीते शास्त्रीय संगीत के जनक ह । संगीत के परिभाषा में कहल गइल बा- "गीत वाद्यं च नृत्यं त्रिकं संगीतम् उच्यते" अर्थात गीत, नृत्य अवरू वाद्य के तिकड़ी के संगीत कहल जाला । एकरे के तौर्य्यत्रिक कहल गइल बा । संगीत के भेदन में शास्त्रीय, सुगम अवरू लोक-संगीत बा । इहनी में स्वर अवरू लय-ताल के समवाय रहेला । स्वर अवरू लय के एक दोसरा से अलग ना कइल जा सकत बा । शास्त्रीय संगीत में कवनो राग खातिर पाँच से सात स्वरन के आवश्यकता पड़ेला । पर लोक गीतन खातिर प्रो॰ कमला श्रीवास्तव के अनुसार तीन से चार स्वरन के योगदान (कलाकुंज माह जुलाई 2002 पृ. 13) अवरू डॉ॰ शान्ति जैन के अनुसार तीन, चार भा पाँच स्वरन के योगदान रहेला (लोकगीतों के संदर्भ और आयाम, पृ. 10) । अइसे त लोक गीतन के विकास क्रम में गीतन के परिधि बढ़ रहल बा ।

सार्थक शब्दन के छन्द गीत अवरू संगीत रूप में स्वर लय-ताल प्राप्त कके अधिक प्रभावोत्पादक हो जाला, संगीत में रागन के सम्बन्ध स्वरन से बा ठीक ओसही लोक गीतन के धुनन के सम्बन्ध स्वरन से बा । दिन अवरू रात के हरेक पहर खातिर अलगे अलगे राग होलन स, ओसही लोक-धुनन के सम्बन्ध मौसम अथवा खास समय से बा । मौसमी लोकगीतन में होरी, फगुआ, फगुई, जोगिरा आदि माघ-फागुन से सम्बन्धित बाड़न स त घाटो भा चइता चइत माह से । कजरी के गीत बरसात में रस उड़ेलत रहेलन स त आनन्दोत्सव में सोहर धुन से काम लेल जाला । पराती भोर में गवाला । विभिन्न संस्कारन खातिर विभिन्न धुनन के गीतन से काम लेल जाला । बालापन के गीत सोहर, लोरी, झूमर, खेलवना आदि के गीत हवन स त जवानी के गीत विभिन्न रसन में सराबोर करत रहेलन स । बुढ़ापा के गीतन में भजन, कीर्तन, निर्गुण, पराती आदि के गीत बाड़न स । मुअला प शान्त रस के निर्गुन के गीत गवाला । कुछ अइसनो धन बाड़न स जवन सदाबहार के हवन से जइसे पँवारा, पूर्वी, झूमर, बिरहा, निर्गुण आदि । औरत के रोवलो रागात्मक होला । एहतरी राग आ धुन जीवन के हर पहलू से जुड़ल बा ।

भारतीय संगीत में जवन काम राग से लेल जाला उहे काम लोक गीतन के धुन से लेल जाला । धुन के सम्बन्ध नाद ब्रह्म से बा । शब्द भेद से नाद आठ प्रकार के मानल गइल बा जइसे घोष, राव, स्वन, शब्द, स्फोट, ध्वनि, झंकार, अवरू ध्वंकृत । धुन ध्वनि के तद्भव रूप ह । वीणा के पंचम् के तार छेड़ला प जवन सुखद नाद होला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओह तरह के नाद के ध्वनि कहल जाला । कहल गइल बा कि पंचम् स्वर के स्थापना कोइलर के कूक से भइल बा । सिनेमा-जगत के गायिका श्रीमति लता मंगेस्कर के स्व० ओंकार नाथ ठाकुर कोकिल कंठी कहत रहीं । ओही पंचम् के सुर से भोजपुरी लोक गीतन के मधुरिमा के आकलन कइल जा सकता ।

लोक गीत जीवन के हर पहलू से जुड़ल बा । ओह गीतन के कवनो ना कवनो धुने में गावल जाला । गीतन के प्रकार में कर्मगीत अवरू जाति गीत देखावल जा रहल बा । कर्म गीत भा जाति गीतन में कर्म या जातिगत बातन के प्रधानता रहे के चाहीं । बाकी अइसन नइखे पावल जात । ओह गीतन में विभिन्न भावन के साथे धुनन के प्रधानता बा । डॉ० कृष्ण देव उपाध्याय के सम्पादन में "हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग" द्वारा प्रकाशित "भोजपुरी लोक गीत द्वितीय भाग" में कर्म गीतन के रूप में जँतसार के 19, रोपनी के 10, सोहनी के 15 अवरू जाति गीतन के रूप में कहाँर के 7 आ गोड़ के 10 गो गीत देल बाड़न स । इहनी के धुनन के विवरण नीचे देल जात बा-

कर्म गीत

(क) जँतसार के गीत सं. 1,3,5,8,11,14 आ 17 निगुर्ण के, सं. 6,7,10,15 आ 18 पूर्वी के, सं. 2,4,9,12,13,16 आ 19पँवारा धुन के बाड़न स ।

(ख) रोपनी के गीत सं. 1,2, पचरा के, सं. 4,7 झूमर के, सं. 8,10 पूर्वी के, सं. 3,5 आ 6 झूमर भा निर्गुन के, कं. सं. 9, घँवारा भा निर्गुन के बाड़न स ।

(ग) सोहनी के गीत सं. 1,2,7,10 आ 14 झुमर के, सं. 3 पँवारा के, सं. 4, 9,12 आ 13 निर्गुन में बा ओह में जाता चलावे अवरू पीसे के बात बा । जइसे-

"ए राम्रा पियवा बखाने धरवा आपन, जोड़ी जाँत आनी देले हो राम टेक
ए राम जाँतावा गाड़ेले गजओबर, बयरिया ना लागेले हो राम ।
ए राम पीसत पीसत गरमी भइले, ओसरवा में ठाढ़ भइली हो राम ।"

एह गीत के सोहनी में सुमार कइल बा ।

जाति गीत

(क) कहाँर के गीत सं. 1,6, पँवारा के, सं. 2,3 झूमर के, सं. 4,5, आ 7 पूर्वी धुन के गीत बाड़न स ।

(ख) गोंड़ के गीत सं. 1 बिरहा के, सं. 2,3,4 आ 6 पूर्बी के, सं. 5, 9 आ 10 निर्गुन के, आ क्रमांक 8 झूमर के गीत बाड़न स ।

एहतरी कर्मगीतन में 44 अवरू जाति गीतन में 17 कुल 61 गीत बाड़न स जवना में निर्गुन के 14 पँवारा के 11, पूर्वी के 10, पचरा के 2, झूमर के 14 आ बिरहा के 1 गीत बाड़न स ।

जहाँ तक कर्म गीतन में जँतसार, रोपनी आ सोहनी के गीतन के बात बा ओहनी में भावात्मक रूप से इहनी से सम्बन्धित कवनो तरह से कर्म के अभिव्यंजना नइखे । ई दोसर बात बा कि काम के रूचिकर बनावे खातिर अवरू परिश्रम से ध्यान हटावे खातिर गीत गावल जाला । एह से स्पष्ट बा कि मनोविज्ञान के अनुसार श्रम के कष्ट से ध्यान बांटे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खातिर गीतन के सहारा लेल जाला । बिवाह शादी के अवसर प जाँता चलावत खानी विभिन्न धुनन के गीत गवाला । बरसात में जाँता चलावत कजरी गवाला । उहे कजरी के गीत रोपनी भा सोहनी करत गावल जाला । झूला झूलत खानी उहे कजरी सुनाई पड़ेला । एह प्रकार कजरी धुन के गीत कर्म गीत ना हो के मौसमी गीत ह । जइसे-

"हरि-हरि कृष्ण बनलें मनिहारिन पहिरलें साड़ी ए हरिऽ ।
सिर लेले डगरिया भारी, चुड़ियन के छबि निराली रामाऽ ।
आरे रामाऽ करत गलिन में पुकार कोई पहिरन वाली ए हरिऽ ।
सखि टेर टेर गोहराई, तू इधर आवऽ मनिहारिन रामा ऽ ।
आरे रामाऽ अइसन चुड़ी पहिरावऽ पिया के लागे प्यारी ए हरिऽ ।
हरि बँहिया पकड़ि पहिराई, कृष्ण धीरे-धीरे मुसुकाई रामाऽ ।
आरे रामा चिहुँक उठे राधा प्यारी हँसत ब्रजनारी ए हरिऽ ।।

-(भो. लोक गीतन के संसार, पहिला भाग पृ. 129)

ऊपर के गीत कृष्णाश्रयी शाखा के सगुन भक्ति में संयोग शृंगार के रसधारा प्रवाहित करे लागेला जवन कजरी धुन के बा । जाँता चलावत, रोपनी भा सोहनी करत गवला से कर्म गीत ना हो सके । झूला के समय झूला के गीत ना बन जाई । कवनो जाति विशेष के कवनो विशेष अवसर प गवला से जाति गीत ना बन सके । ई त कजरी धुन में बरसात के गीत ह ।

इहे हालत जातिगत गीतन के बा । कहाँर के गीतन में पँवारा, झूमर अवरू पूर्वी धुनन के गीत विभिन्न भावन के जरिये रससिंचित करेलन स । गोंड़ के गीतन में विरहा, निर्गुन, पूर्वी आ झूमर के गीत विभिन्न भावन के जरिये श्रोता के उद्वेलित करे में समर्थ बाड़न स । बाकी इहनी में जातिगत गीत होखे के ना सुगन्ध बा ना दुर्गंध बा । लोगन में भ्रम पल रहल बा कि कर्म अवरू जाति के गीत अलग अलग होला । सचाई इहे बा कि विभिन्न प्रकार के भावन अवरू रसन के छन्द विभिन्न प्रकार के धुनन में गावल जाला । समय के अनुसार एह गीतन के उपयोग कइल जाला । सोहनी के गीत सं. 9 में जाँता सम्बन्धी संचारी भाव व्यक्त बा त ओकरा के सोहनी के गीत में सुमार कइल कहाँ तक उचित बा ? एह से स्पष्ट बा कि एह गीतन के कवनो कर्म भा जाति के खूँटा में बान्हल कवनो प्रकार से उचित नइखे ।

फेर बिरहा वर्णिक छन्द ह । एकरा धुन के यादव जाति से जँठ जोड़ कइल गइल बा । ई ठीक बात बा कि गोवर्धन पूजा के समय लाठी खेलत खानी बिरहा गावल जाला । ओह घरी एकरा के दोल्हा पारल कहल जाला । प्रश्नोत्तर शैली में दोल्हा पारत खानी बिरहा छन्द के अन्त में "हो बाजल बोल" कह के छन्द के अन्त कइल जाला । जइसे-

प्रश्नः "कवना रे गँड़िया से चले दूनो भइया कि, केकर रहन ऊजे पूत ।
कथिये खेलत डाँड़ लच लच करेला कि, कथिये खेलत मजगूत ।। हो बाजल बोल् ।

उत्तरः "अपना रे गँड़िया से चले दूनो भइया कि, ऊ हवन अहिरऽ के पूत ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लठिया खेलत डाँड़ लच लच करेला कि, लउर खेलत मजगूत'' हो बाजल बोल ॥
-(लोक गायकी से)

ई मानक बिरहा के छन्द बाड़न स जवना के विषम चरनन में 16-16 वर्ण अवरू सभ चरनन में 10-10 वर्ण बाड़न स । एह छन्द के गवला प बिरहा धुन कहल जाला । विभिन्न भावन से भरल एह लोक धुन के बैल गाड़िवानो खूबे गावेलन । एहसे ई कर्म गीत भ्ा जाति गीत ना हो जाई । फेर भोजपुरी गीत - नाटिका ''धोबिया-धोबिनिया'' के समुचा कथोपकथन बिरहा के ताल छन्द में बा । एकरा के गावे के बेरा बिरहा छन्द के साथे ' ए बाबू' ' हो भइया', ''ए राजा'' आदि जोड़ले ताल दादरा में गावे के परिपाटी बा । जइसेः- विरहा छन्द में-

धोबिनः धोबिया के ए बाबू बिगड़ल रहनिया कि, एको डेग पैदल ना जाय ।
गदहा प लादे लदनिया ए बाबू कि, अवरू अपनो चढ़ि जाय ॥
धोबीः गदहा प लदिया त लदले धोबिनिया कि, चढ़ली टंगरी फए लाय ।
बीच ही डगरिया में गदहा बिगड़ले कि, धोबिन त चलली पराय ।
(लोक गायकी से)

एह से का एह बिरहा के धोबी जाति के समझल जा सकेला ?

आचार्य हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' विरचित "भोजपुरी मेघदूत'' बिरहा छन्द में बा । एह से एकरा के जातिगत आधार देल कहाँ तक उचित होइ ? एह प फेर से सोचे समझे के बा कि छन्द अवरू धुन के जाति से गँठजोड़ कइल कहाँ तक उचित बा ?

डॉ० (श्रीमति) राजेश्वरी शान्डिल्य कृत ''भोजपुरी लोकोक्तियों एवं लोक गीतों में जन जीवन'' के अन्दर श्रम गीत अवरू जाति गीतन के उहे हाल बा जवन ''भोजपुरी लोकगीत द्वितीय भाग'' के हालत बा । एह गीतन के सम्बन्ध में डॉ० शान्डिल्य के स्पष्ट अभिमत बाकि ''श्रम गीतो में भी किये गये श्रम को शब्द ब्रह्म में परिवर्तित नहीं किया जा सकता । .....इसलिये श्रमगीतों के वर्ण विषय श्रम से इतर और जीवन गत अनुभूतियों को गहराई में भोगे हुए छण होते हैं । । (पृ. 193-194) एहू से स्पष्ट बा कि गीतन के श्रम अवरू जाति शीर्षकन में बाँटला के कवनो औचित्य नइखे ।

गीत-संगीत साधना के सर्वोत्तभ साधन ह । एही से कहल गइल बा-

''पूजा कोटि गुणां स्तोत्रं स्तोत्रात्कोटिगुणं जयः
जपात्कोटि गुणं गानं गानात् परतंर नहि ।''

एह से गीतन में कर्म अवरू जाति के विभेद उत्पन्न कइल साधना के शिखर से ओकरा के नीचे गिरावल ह । गीतन में नाद ब्रह्म के उपासना बा जवना में उच्च कोटि के भावयोग रहेला । एह भावयोग के ज्ञानयोग अवरू कर्मयोग के सहोदर मानल गइल बा । ई गीत भावयोग में तादात्म्य स्थापित क के रस कोटि तक पहुँचा देलन स ।

-करनौलः भोजपुर (बिहार)

❖

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ललित निबन्ध

मंगरू ठाकुर के धरोहर

❑ ललन प्रसाद पाण्डेय

चइती नवरातरा के बाद पूरनवाँसी के हनुमान जयन्तीओ बड़ा धूम-धाम से बीत गइल । लगलिए अब असमीयन के सभ से बड़का परब रंगाली बिहू जवन अंदाजन एक महिना ले चलेला, उ चउदह अप्रेल से शुरू हो गइल बा । इ परब ठीक हमनी के फगुए अइसन ह । जवन माघ सुदी पंचमी के सरस्वती पूजा के दिन से शुरू हो जाला । ओही दिने देव-देवी के अबीर चढ़वला का बाद से फगुआ के शुरूआत मान लिहल जाला । एह मौसम के आवते भोजपुरियन के लइका से लेके बुढ़ तक में एगो अजबे जोस समा जाला । धार्मिक से लेके सिंगारिक माने लहरदार फगुआ जहाँ-तहाँ गवाय लागेला । आ बासंती मौसम के बसंती रंग अउर ओह में रंगाइल लोग के मन । फगुओ त प्राकृतिक परबे ह । भलहीं ओकर महातम बढ़ावे खातिर किसिम-किसिम के कथा-उपकथा के एहसे जोड़ दिहल गइल बा । ओइसही रंगाली बिहू के मौसम जवन इहाँ बंगला पंचांग के पहिलका बइसाख आवते असमीया से लेके इहाँ के हरेक जनजाति के लोग बिहुआ जाला । फगुआ के दिनन नीयर एह में रंग के फेंका-फेंकउवल ना होखे बाकिर बिहु गीतन के माध्यम से जवन मदोन्माती गीतन के फेंका-फेंकउवल होखेला ओकर रस ओह सभ के मन के अइसन भींजावेला कि ओकर अरथ जाने-समुझे वाला ओह में भर पोरसा डूब जाला । जेकरा अरथ नइखे मालुम उहो युवा-युवतीन के नाचत अउर ओकर मधुआइल सुरके सुन के उहो भींजे लागेला । जइसे छाता तनल रहलो पर बरखा के बुनी के छिटिका अउर झपास देह अउर कपड़ा के भीगो देला ।

हनुमान जयन्ती के विहान भइले से जवन वरखा अबहीं के नधाइल बा, उ रह-रह के कबहीं सजोर त कबही रीमझीमीयात बरिसत चलल आवता । एही में दू बेर तूफानो आ चुकल बा । उ तूफान एह गाँव में त ना पहुँचल बाकिर आस-पास के गाँवन में ढेर तबाही मचवलस ।

बरखा अबहियों बरिस रहल बा । बाकिर हमार मन एह सभ में नइखे रंगाइल । उ थाक के मउर गइल बा । बेटी के बिआह का बाद से सभ कुछ रहला का बादो एकदम अकेल हो गइल बानी । अब से नौ महिना पहिले दमा के भयंकर प्रकोप से मरे से बाँचल रहनी । आग ओही घरी के टूटल देह अबहियों ले ना जुट पावल जे कहीं बहरी घुम-फिर मन के बहलाईं । हँ, अब अतने होला कि घरहीं घुम-फिर लेत बानी । बेटी रहली त उहे अतना दिन भाई के भूमिका निभवली । हमार हर छोट-बड़ काम आ जरूरत के बे कहले पूरा देत रहली । एह से कि डेढ़ बरिस पहिलें घरनीओ साथ छोड़ गइली ।

घरनी का रहते माने पिछिलका कय बरिस से लइकी के बिआह खातिर आसाम के हर जिलन के चक्कर लगा लेले रहनी बाकिर कहीं संजोग ना बइठल । एगो लइकी के बाप के चिन्ता के अंदाज उहे लोग क सकेला जेकरा कपारे बेटी के बिआह के करजा होखे । देह जबले चलत फिरत रहल तबले हिम्मत अउर आशा रहल, कहीं ना कहीं त संजोग त बइठइबे करब । ओकर हाथ पीयराएब । बाकिर खटिया धइल देह, जवन अपना गाँव से आन गाँव तक जाय लायक ना रहे, ओकर चिन्ता के कल्पने कइल जा सकेला ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बेमारी से थउसल इ देह चिन्ता से अउर अतना थउस गइल कि बुझाय कि एह साल के जाड़ इ देह सह ना पाई । इ करजा कपारे लिहले एह दुनियां से बिदा लेबे के पड़ी । जाड़ का बादे से त नवका साल के लगन शुरू होला ।

भगवती के गोहरावल छोड़ हमरा लगे दोसर कवनो उपाय ना रहे । अब बुझाता कि शायद भगवती हमार गोहार सुन लेली । लगहीं के (माने नजदीकी शहर के) एक जना परिचित एह सम्बन्ध में हमरा लगे पहुँचले । उहाँ सम्बन्ध करावे खातिर, जहाँ पिछिलका बरिस हम कयबेर कोशिश क चुकल रहनी । बाकिर सफल ना भइल रहनी । ओही घरे सम्बन्ध करावे के पक्का वचन इ सज्जन दे गइलें । उहे भइल । सभ हित साथी लोग सहयोग देहल, कहीं खरो ना खरखराइल, खरचा हमार, करे वाला हित लोग । कन्यादान अनुज कइले । लइकी बिदा हो गइली । संतोष बा, कि उ खुश बाड़ी । ओह चिन्ता से मुक्त भइला का बाद लागल कि शायद अब तनिका जल्दीए एक बेर फेर पहिले अइसन हो जायब । इ हमार सोच बा । गरमी आवता, देह केतना नीक भा बाउर होई समइए बताई ।

एही बरखा में खिड़की से देखनी कि छाता तनले ठेहुना परले धोती पहिरले मंगरू ठाकुर हमरे घर का ओर आ रहल बाड़े । सोचनी, एक से दू भला । मनगर आदिमी हउवन । चेहरा पर उदासी शायदे कबहीं हम देखले होखब । छाता छिटिका दरवाजा का बहरी देवाल से ओठंगा के 'पाव लागिले पांड़े जी, कहत उ भीतर अइले आ हमरा बिछौना का बगल में राखल कुरूसी पर बइठ गइले । आसीरबाद देत हमहूँ अब ओठंग के बइठ गइनी । बरखा चालुए रहल ।

"बरखा बन्द होखे, त रउवा लगे जाईं, एह बात के इंतिजार करत कय दिन हो गइल । बाकिर बरखा बा कि छूटे के नाँवे नइखे लेत । एही से आज बरखे में चल दिहली" कहत ठाकुर पूछले - " कहीं, तबियत कइसन बा एह घरी, एगो बाड़का भीर रउवा कपार से उतर गइल । अब त पहिले से ठीक होखे के चाही ।" अपना प्रश्न के अपने जबाबो देत हमरा इयोर तकले । हम कहनी "अबहीं का अंदाज होई । महिना भर से त बरखे गिर रहल बा । जानते बाड़, अइसन मौसम से एह बेमार के बैर ह ।" मुड़ी हिला ठाकुरो स्वीकार कइले । एकरा बाद कुछ देर ले एने ओने के बात चलला का बाद ठाकुर पूछ बइठले "पांड़े बाबा, एगो बात सुनले रहनीं । ढेर बरिस के कवनो पुरान चीज के दाम ढेर बढ़ जाला । लोग ओकरा के ऐतिहासिक कहेला । कउड़ीयो के लउके वाला चीज हजार लाख तक पहुँच जाला ।"

"हँ, कहत त ठीके बाड़ । बाकिर चिज ओइसन होखे तब नू ।" हम उनुका इयोर तकनी ।" "एही से नू हमार दादाजी के जबाना के कयगो सामान हमार बाबूजी बड़ा जतन से रखले रहले । उनुका बाद ओह सामानन के उनहूँ से अधिका जतन से गाँवे एगो कोठरी में हम राख देले बानी ।" मंगरू के बात सुन उत्सुकता से उनुका ओर ताकत पूछनी- "का-का रखले बाड़ हो ? कय गो सामान बा ।" ठाकुर कहले एगो त उ सइकिलिया बीया, जवन दादाजी के बिआह में दहेज मे मिलल रहल । सुनले बानी ओह जबाना मे ओकरा के देखे खातिर गाँव में भीड़ लाग जाव । उनुका के साइकिल चलावत देख राह के लोग खड़ा होके चिहा के देखे लागत रहे लोग । उ अंग्रेजन के जबाना रहे । एगो अंग्रेज हाकिम के खास आदिमी कहात रहले हमार दादाजी, बाड़ा मान-सम्मान रहल उनुकर । उनुके जबाना के ईंट के बनावल घर अब जेने-तेने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

से ढेहता। ढेर जमीन, जायदाद उ उपरजल रहले, आकि उनुका गुजरला का बाद आपस में लोग बँटवारा करके सभ उड़ा-मड़ा देहल लोग। बँटवारा का बेरा चालाकी से हमार बाबूजी दादाजी के साइकिल अउर लोखर जवना में साहेबन के हजामत बनावे वाला सामान छूरा, कईंची, मशीन रहल एक बीघा खेत के बदले उ अपना जिम्मे राख लिहले, ई बात हमार बाबुजी हमरा के बतवले रहले कि हमार दादाजी के ओघरी जवन मरजादा रहल उ भिखारी भा कर्पूरी ठाकुर से कम ना रहल। ओही से उनुकरा चिन्ह के आवेवाला पीढ़ियन के देखावे खातिर ओह अनमोल चिजन के बाबूजी थाती रूप में अपना जिनिगी भर रखले। मरे के बेरा हमरा के सँउपत कहले रहले ''बबुओ, इ तोहार दादाजी के सामान ह। ओह मान-सम्मान के हम आजुले जोगा के रखले रहनी। अब तहरा के सँउपत बानी। अब एकर रखबार तूंही बाड़।'' तब से ओह सामानन के कोठरी में एगो चउकी पर रखले बानी। बीच-बीच में जब गाँवे जाइले त कोठरी के खोल के ओकनी के झाड़-झूड़ के तेल लगावत रहिले, जे मुरचा के बरबाद ना होखे।'' अतना सभ एकसुरए कहला का बाद तनिका शान से हमरा इयोर तकले। जइसे उनुकर नजर कह रहल होखे कि हमहूँ कवनो ऐरा-गैरा खानदान के ना हईं।

हम तनिका चिहात अउर अपना कटाक्ष के छिपावत कहनी ''तब त माने के पड़ी कि खानदानी ठाकुर हउव। बाकिर अतना कीमती अउर ऐतिहासिक चीजन के आज ले छिपा के रखले बाड़, एह पर हमरा अचरज बा। साइकिल चलावत त हम तहरा के कवनो दिन ना देखनी, जबकी तहरा लगे (घरे) तहरा दादाजी के साइकिल बा।'' 'ए महाराज, रउवो कइसन बात कहतानी -' ठाकुर कहले ''-होस भइला ले हम अपना गाँवे रहनी। बाकिर हम अपना बाबुजीओ के त ओकरा के चलावत कबहीं ना देखनी। बाबुजी से ना चलावे के कारण पूछला पर बतवले रहले- बबुओ, ओह घरी शहर छोड़ ओकरा के बनावे वाला त आस-पास के गाँवो में केहू ना रहल। जे ओकरा के बनावो, भा चले लायक होखे। एही से ना उ बनल, ना फेर केहू ओह पर चढ़ल।''

अब हम ठाकुर क टन् दे कइसे कह दिहीं कि अंग्रेजन के हजामत बनावेवाला छुरा-कईंची अउर ओह घरी के टूटल फूटल साइकिल कवनो ऐतिहासिक धरोहर ना होखे। जेकर मोल हजारन अउर लाखन में लागे, भा ओकर संरक्षण ठाकुर नीयर पीढ़ी दर-पीढ़ी कइल जाव। फेर मंगरू ठाकुर त अबले बाँड़े बाड़े। इहाँ एगो चाह मजदूरनी के फंसा बिआहो कइले त, इनिकर गांजा के धुकाई अउर ढोलक के पीटाई से अगुता के आन कवनो का साथे परा गइल। इनिका दादाजी के ओह ऐतिहासिक धरोहर के त इनिका बाद कहीं फेंकहीं के बा। एकरा बादो मंगरू के परतोख देत हम कहनी - 'इ बात कुछ बरिस पहिले तू हमरा के कहले रहत त इहाँ लागल पुरनका चिजन के प्रदर्शनी में ओकनी के जगहा दिवावे के चेस्टो हम करीतीं। संतोख राख। फेर कबहीं अइसन मोका आई त एकर वेवस्था कइल जाई। सचहूँ तहार धरोहर लाखन के बा।''

सुन के मंगरू के चेहरा दमकल। पाकिट से खइनी निकाल ओकरा के रगड़त कहले- ''पांड़े जी, आज ढेर बइठकी हो गइल। बरखो लगभग थमिए गइल बा। हूकुम दिहिंती, त एह उबेर में एकाधगो काम क लिहीं।'' अइसहीं आवत रहे के कह के उनुका के जायके कहनी।

❖ -अरड़ूवी बाजार, पोस्ट- हुजरीजान, जिला- तिनसुकिया (असम) 786601

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0 ization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संसद में कम्पटीशन

❑ अरविन्द विद्रोही

टी.वी. पर संसद के करवाई आ अपना प्रतिनिधि लोगन के देख के मन गद गदा जाला । हमरा त इ कहें में तनिको संकोच नइखे कि इ जीव लोग लोकतंत्र के प्राणप्रतिष्ठा बचा के राखे में काफी सक्षम बा । संसद में उठत प्रश्न आ उहां चुपचाप बइठल लोग आ चलत जूता चप्पल के फेका फेकी देख के मन मोर लेखा नाच उठेला । हमार संसद मछली बाजार से कवनो माने में तनिको कम नइखे । गतिशील जनतंत्र के ई शुभ चिन्ह बा । ना जाने अपने का एकर का माने लगावत होखब । हमरा त इहे बुझाता ।

जे अपना संसद के देखे खातिर पांच साल ले लोग आंख पसरले रही ओ लोगन के दूरदर्शन अपना टी.वी. स्क्रीन पर रोज-रोज देखा देत बा । जवना के नतीजा बा कि वोटरन के सेहत बिगड़ रहल बा । हमरा बुझात बा कि ई सब उहां के कम्पटीसन के चलते हो रहल बा का दो ? महिला सांसदन के लोकप्रियता जनता के नजर में बढ़ रहल बा । ओकनी में एक ओर चहकन बा त दोसरा ओर मुखरपन । उ हर माने में बाजी मार रहल बाड़ी । ई सब देख के हमरा अइसन बुझाता कि मरद सांसद लोग इ जान के बड़ा चिंतित बा । उ लोग अब औरतन के सवाल के लोक सभा में जम के उठा रहल बा । पहिले ई बात ना रहल ह ।

एगो सांसद लोक सभा में "माला" के सवाल उठवले कि माला के क्वालिटी घट रहल बा आ औरत सब "माला" के अपनावे नइखी चाहत काहे कि "माला" के घटिया क्वालिटी के चलते औरतन में कई तरह के रोग हो रहल बा । उ कहले मंत्री, महोदय ई सब जे हो रहल बा जवन चिंता के बात बा । सरकार "माला" पर करोड़न के खर्च कर रहल बिया । ई घोर चिंता के बात बा । बाकिर ई बात "माला" ए आ "माला' डी के साथ बा नाही बता पवले श्रीमान जी । सवाल इ बा कि माला के सवाल त महिला सांसदन के उठावे के हक बनता त फेरू एमें मरद सांसद लोगन के नाक घुसवला के का माने । हमरा त इ बुझाता कि मरद लोग ए बात के समझ रहल बा कि औरतन के वोट त कम नइखे अगर ओकनी के सवाल ना उठावल जाई त वोट कट जाई आ जब चुनाव में औरत सवाल करिहें कि श्रीमान अपने के हमन के केतना सवाल लोकसभा में अब ले उठवनी त एकर जबाबो ना नू जुरी । आखिर "माला" त औरतन खातिर बा । फेरू पुरूष सांसद लोगन के माला के क्वालिटी के चिंता काहे के ? हमरा त इहे बुझाता कि एही से कहीं ई कम्पीटशन त नइखे हो रहल कि महिला लोग ही खाली औरतन के सवाल के काहे उठाई । का मरद औरतन के समस्या के नइखे समझ सकत का ? काहे कि एगो महिला सांसद ए सवाल के उठवले रही कि सरकार एह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
बात के बताओ कि देश में औरतन खातिर जवन श्रृंगार के चीज बन रहल बा ओकर क्वालिटी घटिया काहे हो रहल बा ? ए घटिया क्वालिटी के चलते नारी के रूप रंग में बिगड़ाव आ रहल बा । नारी आपन ओठ रंग के लाल लिपिस्टीक से लाल राखेलीं । बाकिर देखल जा रहल बा कि ए से उनकर ओठन पर दाग हो जा रहल बा । सुहागिन औरत अपना माथ पर टिकुली साटेली । उ जहां पर टिकुली साट रहल बाड़ी उहां उजर दाग हो जा रहल बा । ई सूचना बा कि ई सब एसे हो रहल बा कि श्रृंगार साधन बनावे वाला लोग आपन कवनो निशान ओ माल पर नइखे लगावत जवना से ई जानकारी हो सके कि कवन माल उत्तम श्रेणी के बा आ कवन घटिया । ओपर मैनिपैचरिंग डेटो नइखे रहत । हम मंत्री महोदय से ई बात जाने चाहत बानी कि का सरकार ए बात के घोषणा करी कि श्रृंगार प्रधान साधन पर उत्पादक लोगन पर सामान के मैनिपैचरिंग आ एक्सपायरींग डेट लिखे के आदेश प्रदान करी ?

वास्तव में अइसन सवाल आज ले पुरूष सांसद लोग ना उठावल । ए तरह के सवाल महिला लोगन के निश्चित प्रभावित करी । श्रृंगार प्रसाधन महिला सबके सुन्दरता बढ़ाबे के लिए बा, बिगाड़े खातिर ना । अब त फिलिम उद्योग में लागल हिरोइन सब सांसद हो रहल बाड़ी । अगर असही रूप रंग बिगड़त रही त फिलिम उद्योग के का होई ? ए सवाल के उठावे वाली महिला सांसद का जाने भुक्तभोगी रहल बाड़ी कि ना बाकिर ए सवाल में त दम जरूर बा ? उ एगो अदना सवाल उठा के देश के औरतन के दिल आसानी से जीत लिहली । इहां ई सवालो खड़ा हो जात बा कि अबले मरद लोग अइसन सवाल के काहे ना उठा पवले रहल हा । हमरा त इहे बुझाता कि मरद लोग आपन उखड़त पैर के देख के अब औरतन के सवाल के खूब उठा रहल बा । "माला" के सवाल के संसद में उठा के उ लोग ई बता देल चाहत बा कि मरद लोग औरतन के समस्या के खुब निकी तरह से जानता आ उ संसद में राखे के बुतो राखत बा । 'ई कम्पटीशन त अब चालू बा । एकरा बाद अब महिला सांसद लोग निरोध के सवाल के जरूर उठाई ।

कहीं महिला आरक्षण बिल पास हो गइल त कतने सांसद लोग के पता साफ हो जाई । ऊपर से हँ-हँ आ भीतर से ना-ना । दू गो चेहरा, दू गो बात, दू गो रंग आखिर सफल नेता के निशानी काहे मानल बा । लोकतंत्र के सेहत खातिर मरद-मेहरारू के झगड़ा ठीक नइखे नू ? जब नेता लोग के कथनी-करनी एके हो जाई त ऊ सन्त ना बन जाई आ लोकतंत्री सरकार का सन्तई से चली ? सांसद बन के देश के सेवा कइल हँसी-ठाठा ना नू हवे । संसद में हर तरह के कम्पटीशन एही से चल रहल बा । अब रउरा ना बुझाय त हम का कहीं । ढेर कहेब त बात बिगड़ जाई । जनता त सब जानेले । साँचो का ?

-ई, डब्बलू एस 13/8, छोटागोविन्दपुर, जमशेदपुर, (झारखंड)

❖

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आजु के भोजपुरी साहित्य'': सुविचारित निबंधन के संग्रह

❑ डॉ॰ ब्रजभूषण मिश्र

[पुस्तक के नाम: आजु के भोजपुरी साहित्य, विधा-निबंध, लेखक: डॉ॰ रिपुसूदन श्रीवास्तव, संस्करण: प्रथम 2003, प्रकाशक: राष्ट्रीय प्रकाशन संस्थान, मुजफ्फरपुर; मूल्य: 80.रूपेया, पृ.: 53]

भोजपुरी में निबंध लेखन के इतिहास बहुत पुरान नइखे, तबहुँओ विविध रूप के निबंधन के सैकड़ों रचना उपलब्ध बाटे आ दर्जनों संग्रह प्रकाशित हो चुकल बा । 'आजु के भोजपुरी साहित्य' 2003 में प्रकाशित होके एह कड़ी के आगे बढ़ा रहल बा ।

'आजु के भोजपुरी साहित्य' के लेखक बानी डॉ॰ रिपुसूदन श्रीवास्तव । डॉ॰ श्रीवास्तव दर्शन के विद्वान इईं, हिन्दी-भोजपुरी के लेखक: कवि हईं, अंग्रेजी-हिन्दी-भोजपुरी के अनेक पुस्तकन के संपादक हईं । एही से इहाँ क विविध विषयन पर लिखल निबंध अनुकरण हो सकत बा, ओकरा से दिशा-निर्देशन लिहला जा सकत बाटे ।

'आजु के भोजपुरी साहित्य' में एगारह गो निबंध संकलित बाटे, जवन 30 बरिस के अवधि में समय-समय पर डॉ॰ श्रीवास्तव के द्वारा लिखल गइल बा आ चाहे उनका से लिखवावल गइल बाटे । ई सब कवनो ना कवनो पत्रिका में प्रकाशित बा, आकाशवाणी से प्रसारित बाटे, भा गोष्ठी में पढ़ल गइल बा ।

एह संग्रह में पहिला निबंध बा- 'आजु के भोजपुरी कविता ।' ई निबंध आधुनिक बोध के छंदमुक्त कवितन के संग्रह के भूमिका के रूप में लिखल बा । ई भोजपुरी कवितन के सैद्धान्तिक समीक्षा बा । एह लेख के माध्यम से डॉ॰ श्रीवास्तव के कहनाम बा कि 'कविता खाली मनोरंजन ना ह', कविता लटकाबाजी आ नाराबाजियो ना ह, कविता कवनो सिद्धान्त के पद्यानुवाद भी ना ह, कविता तन आ मन दूनू स्तर पर झेलल अनुभूति के कवनो सार्थक उद्देश्य से कइल रसगर अभिव्यक्ति ह, जवना के तेवर देश काल आ परिस्थिति से अनुकूलित होला ।''

'सूतल जवानी के जगावे वाला कवि श्रीमंत' एह संग्रह के दूसरका लेख बा, जवन' भारतीय भोजपुरी साहित्य परिषद के मोतिहारी अधिवेशन (1996) में दिहल गइल व्याख्यान बा । एह में भोजपुरी के सपूत आ कवि लेखक स्व॰ सिपाही सिंह श्रीमंत के भोजपुरी के बढ़न्ती खातिर उदार व्यक्तित्व आ उनका कवि के स्मरण कइल गइल बा । डॉ॰ श्रीवास्तव श्रीमंत जी के प्रगतिवादी कवि के रूप में प्रतिष्ठित कइले बानी ।

एह संकलन के तीसरका निबंध 'भोजपुरी साहित्य के काल विभाजन' 1993 में आकाशवाणी में पढ़ल आलेख बा । ई आलेख पहिला अइसन आलेख बा जेमें भोजपुरी साहित्य के काल खंड में बाँट के ओकर नामकरण करे के प्रयास भइल बा । काल विशेष में प्रवृत्ति के प्रधानता के आधार पर ओकर नामकरण इहाँ का कइले बानी ।

1993 में आकाशवाणी से प्रसारित आलेख- 'भोजपुरी कविता के प्रकृतिवादी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काल' चउथा निबंध बा जबकि 1996 में आकाशवाणी से प्रसारित आलेख 'सतीश के गीतन में प्रकृति-चित्रण'। एह दूनू आलेखन के माध्यम से जहाँ एक ओर भोजपुरी कवितन में प्रकृति के प्रति अनघा प्रेम के चरचा उहाँ का कइले बानी, ओतहीं प्रकृति का आलंबन सेशृंगार के निठाह अभिव्यक्ति सतीश के विशेषता बतवले बानी ।

एह संग्रह के नउवाँ लेख 'घर के गूर के गूर' एगो पुस्तक समीक्षा बा । जवन 1988 में 'कोइल' पत्रिका का अंक 5 में प्रकाशित बा । ई लेख अविनाश चन्द्र विद्यार्थी के निबंध संग्रह 'घर के गुर' के समीक्षा बा । बिना लाग लपेट के बेबाक समीक्षा के ई लेख बढ़िया उदाहरण बा, जवन लेखक पर ना रचना पर ध्यान राखत बा ।

'भोजपुरी कविता में गीत तत्व' एह संग्रह के दसवाँ लेख बा, जे आकाशवाणी पटना से प्रसारित बा । एह आलेख में भोजपुरी गीतन पर शास्त्रीय विचार भइल बा । एह आलेख में काल खण्ड में बाँट के गीतकारन पर विचार भइल बा । डॉ॰ श्रीवास्तव के विचार में भोजपुरी गीति-काव्य समसामयिक परिवेश के सुख-दुख, कुंठा, आक्रोश, व्यवस्था के खिलाफत, राजनीति से उबियाहट आ जिनगी से संघर्ष के रेखांकित कर रहल बा ।

भोजपुरी कविता पर केन्द्रित एह छह आलेखन के अलावे एक आलेख 'भोजपुरी गद्य के विकास यात्रा' (1973 में बिहार विश्वविद्यालय भोजपुरी गद्य संग्रह में संकलित) लेख बा जवन ओह घरी तक के भोजपुरी गद्य के समीक्षात्मक इतिहास प्रस्तुत करत बा । ई संग्रह के सातवाँ लेख बा । छठा लेख 'भोजपुरी संस्कृति के बदलत रूप' बा । भोजपुरी संस्कृति के विशेषता के गंभीरता से चरचा करत, ओह में आन-आन तत्वन के कारण हो रहल घालमेल पर इहाँ के दृष्टि गइल बा ।

एह निबंध संग्रह क आठवाँ आ एगारहवाँ निबंध चिंतन परक ललित निबंध बा । 'जिनगी सवाल का कटघरा में । 1987-88 में भोजपुरी परिवार पत्रिका में प्रकाशित बा जबकि अंतिम एगारहवाँ निबंध 'पुल कमजोर बा' 1977 में भोजपुरी निबंध निकुंज में संकलित बा । पहिला लेख में जिनगी के हर ओर से देखत ई बतावे के कोशिश कइल गइल बा कि तूरे वाला ताकत से जोड़ेवाला ताकत बलशाली बा । 'पुल कमजोर बा' में 'डायभरसन' का प्रतीक से सामाजिक जीवन में डेग-डेग पर तरह-तरह का 'डायभरसन' के इजाद क के पैदा होखे वाली विसंगति, कुंठा, संत्रास, आपाधापी के चरचा कइल गइल बा । ई बतावे के प्रयास डॉ॰ श्रीवास्तव कइले बानी 'डायभरसन' से जिनगी आगे कब घड़ी बढ़ी 'पुल' के मरम्मती आ निर्माण जारी रहे के चाहीं ।

भोजपुरी साहित्य-संस्कृति पर केन्द्रित लेखन में ई स्पष्ट बा डॉ॰ श्रीवास्तव भोजपुरी के साहित्यिक स्वरूप निर्धारित करत लोक आ शास्त्र में उँरेड़ खींचे के आग्रही बानी । ओतहीं चिंतन परक निबंधन में आम आदमी के सुसंस्कृत बनला पर जोर देत बानी ।

डॉ॰ श्रीवास्तव के भाषा विषयानुरूप साफ आ प्रवाहमय बा आ पाठक के कहीं अझुराए नइखे देत । ऊहाँ के दृष्टि जवना तरह साफ बा, ओही तरहे विचारो सुस्पष्ट बा । ई निबंध संग्रह, निबंध लेखकन खातिर मार्ग दर्शन करत बा । ❖

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गतिविधि

'आजु के भोजपुरी साहित्य' के लोकार्पण

भोजपुरी के बढ़न्ती में मुजफ्फरपुर एगो प्रमुख केन्द्र बा । भोजपुरी के अकादमिक विकास मुजफ्फरपुर से शुरू भइल । भोजपुरी मुजफ्फरपुर के एल.एस. कॉलेज मे पढ़ावल जाए लागल आ 'विश्वविद्यालय भोजपुरी पद्य संग्रह' आ 'विश्वविद्यालय भोजपुरी गद्य संग्रह' के संपादन- प्रकाशन भइल । एकरा पीछे जे लोग के जीव-जाँगर लागल रहे, ओह में से एगो डॉ॰ रिपुसूदन श्रीवास्तव जी रहीं । डॉ॰ रिपुसूदन श्रीवास्तव जी दर्शन के विद्वान के साथ-साथ हिन्दी-भोजपुरी के कवि- साहित्यकार का रूप में सोहरत पवले बानी । अपने के जनम दिन 13 अप्रील ह । 13 अप्रील के अपने के जनम दिन बड़ा उत्साह से मनावल जाला । बाकिर 13 अप्रील 2004 के मनावल गइल अपने के जनम दिन एह से खास चरचा में रहल कि ओही दिन अपने के निबंध संग्रह 'आजु के भोजपुरी साहित्य' के लोकार्पण भी भइल ।

'आजु के भोजपुरी साहित्य' के प्रकाशक राष्ट्रीय प्रकाशन संस्थान' के निदेशक कुमार अभिषेक आगत अतिथि लोग के हार्दिक स्वागत कइलें । एकरा बाद डॉ॰ श्रीवास्तव के माल्यार्पण आ अंगवस्त्र से अभिनंदन क्रमशः डॉ॰ जयकांत सिंह 'जय' आ डॉ॰ ब्रजभूषण मिश्र कइलें । भोजपुरी के नामी साहित्यकार, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के उपाध्यक्ष आ भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के संपादक प्रो॰ ब्रजकिशोर जी पुस्तक के लोकार्पण करत कहनी कि डॉ॰ रिपुसूदन श्रीवास्तव जी भोजपुरी साहित्य के नया फलक देले बानी । मुख्य अतिथि पद से हिन्दी नवगीत प्रवर्त्तक आ आलोचक श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह कहनी कि डॉ॰ श्रीवास्तव भोजपुरी आलोचना के भाषा के अलग आकार देले बानी । कार्यक्रम के अध्यक्षता करत हिन्दी भोजपुरी के सम्मानित रचनाकार डॉ॰ शिवदास पाण्डेय जी भोजपुरी में सर्जनात्मक साहित्य के अलावे आन विधा के रचना के विरोध में उठे वाला सवालन के खंडन करत भोजपुरी में हर तरह का साहित्य रचना के जरूरत पर बल दिहनी । हिन्दी के विद्वान डॉ॰ महेन्द्र मधुकर जी के विचार रहे कि भोजपुरी विश्वबंधुत्व के भाषा हे आ एकरा प्रमुखता से लेवे के चाहीं । डॉ॰ रिपुसूदन श्रीवास्तव आपन विचार व्यक्त करत एगो बड़ा महत्वपूर्ण बात कहलीं कि भोजपुरी में ई संग्रह एह से कि कवनो भाषा का मुहावरन के सही-सही अनुवाद दोसरा भाषा में ना हो सके । एह अवसर पर भोजपुरी के सेवा में लागल साहित्यकार लोग जीतेन्द्र वर्मा (सीवान), डॉ॰ लाल बाबू तिवारी (पटना), डॉ॰ अरविंद (बेतिया), डॉ॰ जयकान्त सिंह आ डॉ॰ ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), डॉ॰ श्रीवास्तव के भोजपुरी गद्य-लेखन के विशेषता आ सहृदयता के बखान कइलें, ओतहीं हिन्दी के विद्वान साहित्यकार कवि लेखक- डॉ॰ नन्दकिशोर नंदन, डॉ॰ शांति सुमन, डॉ॰ भारती सिन्हा, डॉ॰ पूनम सिंह, डॉ॰ रश्मी रेखा, कुमार विरल, रामेश्वर प्रसाद, रमेश ऋतंभर अपना-अपना विचार से आयोजन के सफल बनवलें । संजय पंकज के रोचक संचालन कार्यक्रम के उबाऊ ना बने दिहलस । एह आयोजन के सफल बनावे में डॉ॰ कविता वर्मा के भूमिका ना भुलावल जा सकी । ❖

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्मेलन के कार्यसमिति के बैठक :

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के कार्यसमिति के 74वी बैठक 2 मई 04 के सम्मेलन कार्यालय में अध्यक्ष डॉ॰ अनिलकुमार आंजनेय के अध्यक्षता में भइल जवनां में कार्यसमिति के सूर्यदेव पाठक 'पराग', भगवान सिंह भास्कर, डॉ॰ जयकांत सिंह 'जय', अविनाश नागदंश, जीतेन्द्र वर्मा, देवनाथ सिंह आ रंजन कुमार उपस्थित रहलीं । बैठक में प्रवर समिति के सदस्य डॉ॰ शंभुशरण, प्रो॰ ब्रजकिशोर आ डॉ॰ स्वर्णकिरण विशेष आमंत्रित के रूप में उपस्थित रहलीं ।

1 गत बैठक के कार्यवाही प्रबंध मंत्री जीतेन्द्र वर्मा प्रस्तुत कइली जवन सर्वसम्मति से सम्पुष्ट भइल ।

2. **भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका** के नियमित प्रकाशन पर विचार भइल । सभे के विचार रहे कि पत्रिका के नियमित प्रकाशन कइल जाव । सभे आर्थिक स्रोत जुटावे के आश्वासन दिहल आ पत्रिका के संपादक प्रो॰ ब्रजकिशोर के जरूरत पड़ला पर ऋण लेवे के स्वीकृति दिहल ।

3. सम्मेलन के सदस्यता अभियान चलावे पर विचार भइल । तय भइल कि कार्यसमिति आ प्रवर समिति के सभे सदस्य कम-से-कम पाँच-पाँच गो सदस्य बनाई । सम्मेलन के पुरान सदस्य जे अब उदासीन हो गइल बा ओकरा के दुबारा सम्मेलन से जोड़े के जरूरत महसूस कइल गइल ।

4. **भोजपुरी प्रकाशन के बढ़त डेग** के प्रकाशन पर विचार भइल । एह पुस्तक के संपादन के जिम्मेवारी डॉ॰ ब्रजभूषण मिश्र के दिहल गइल बा । सभे सदस्य एकरा के जल्दी प्रकाशित करे पर जोर दिहल ।

5. कार्यसमिति के अगिला बैठक प्रो॰ जयकांत सिंह 'जय' मुजफ्फरपुर में आमंत्रित कइलीं ।

अंत में प्रो॰ ब्रजकिशोर धन्यवाद ज्ञापन कइलीं ।

शोक प्रस्ताव

बैठक के बाद अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष आ पत्रकार ईश्वरचन्द्र सिन्हा, कवि सत्यनारायण लाल आ डॉ॰ स्वर्णकिरण के पत्नी श्रीमति मिथिलेश कुमारी के निधन पर शोक प्रकट करत दू मिनट के मौन रखल गइल ।

-भगवान सिंह 'भास्कर'
महामंत्री

❖

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नवही कलम

चुनाव, जनता आ नेता

❑ अखिलेश्वर कुमार गुप्ता

"अमीर नेता आ गरीब जनता के देश अपना भारत में आज जबकि सारा देश चुनाव के दलदल में धँसत जात बा, देश में नेता लोग दिन-रात एक करके जनता के फेर से बहलावे, फुसलावे में लागल बा । जनता का हाथे आगहूँ कुछ लागी कि ना, ना पता । गरीब-गुरवा के चेहरा साँचो चमकी का ? लोग उमेद भले करे बाकिर भरोसा केकरा बा ? खाली शब्द आ आश्वासन से पेट भरी का ? जनता अनपढ़ गँवार रही, जाति-पाँति में अझुराइल, चुनाव का बाद के तनाव पाँच बरीस से झेलत फेरू अगिला चुनाव में तमाशा देखी । जहाँ अपना बिहार में जनता के चलेला सड़क नइखे, त नेता लोगन ओकर बिकल्प में हवाई जहाज से घूमत बा, हेलिकोप्टर उड़ावत बा । जहाँ लोगन के बिजली पानी के दर्शन मोका-कुमोका कभी-कभार हो जाला, उहाँ नेता लोग वातानुकुलित गाड़ी में घूमत बा आ घर में रहत बा लोग । महँगा से महँगा बोतल वाला पानी नेता लोग पियत बा, आ उहे आम जनता के गंदा पानी भी पुरहर नइखे मिलत ।

दुनिया के साथ-साथ अपना देश में भी न जाने कौन-कौन मोबाइल, एसी, कूलर, टी. वी., फ्रीज सब नया-नया आ रहल बा । का कभी सप्ताह में दू-तीन दिन 30-40 रूपया रोज पर कमाये बाला गरीब लोग के कभी ई कुल्ह नसीब होई ? चुनाव में गरीब लाचार जनता के खून-पसीना के कमाई के हजारन करोड़ रूपया हर चुनाव आ पार्टी के प्रचार में पानी खानी बहा देहल जाई । ओकरा बाद बदमाशन के बूता पर भोट छाप के बटन दबा के चुनाव जीत लेहल जाई ।

फेर काल होके गठबंधन होई, मर-मोलाई होई, लक्ष्मी जी के लेन-देन होई ? मंत्री पद ला मारा-मारी होई, आ फेर नया सरकार बनी, नेता लोग आपन-आपन पाकिट गरम करी आ जनता ला कान में तेल डाल के फेर सूत रही । भकोल जनता के का, ऊ त कवनो तरे मानिए जाई । मानी काहे ना, मानहीं के पड़ी । बहुत तरीका बा जीते के । जनता ना मानी त नउजी से ।

आखिर कब तक नेता लोग गरीब बेसहारा जनता लोगन के खून पी । शेर जईसन जानवर भी एक बार खून पी लेला त जब ले भूख ना लागेला तबतक फेर ना पियेला । लेकिन नेता लोग त दिन में तीन बार दु-दू चम्मच झुंडु पंचारिष्ट के खोराक लेवेला लोग । उ लोग के त हमेशा भूख लागते रहेला । आखिर कब तक गरीब जनता के शोषण होई ? का कभी अइसन भी समय आई जब जनता के न्याय मिली, रोजगार-बिजली-पानी के सुविधा मिली ? गरीबन के लईका भी स्कूल में पढ़े जाई आ ओकरा भी कभी एहसास होई की उ भी एही देश के नागरिक बा ।

हमार नेता लोगन से दसो नोह जोड़ के इहे बिनती बा कि रऊआ लोगिन गरीब जनता के बारे में भी सोचीं जौन कि रऊआ लोगिन के सड़क से उठा के कुर्सी देता । ना बेसी त कम-से-कम इन्सानियत के खातिर । ना त एक समय अइसन आई जब जनता के बर्दाश्त के बाहर हो जाई । जनता सड़क पर आ जाई, इन्सान इन्सान के मार के खाई, दुनिया से इन्सानियत खत्म हो जाई । आ, ई सब के जिम्मेवार नेता लोग होई ।

-तुरकौलिया, पूर्वी चम्पारण, (बिहार)

❖

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्मेलन के अनमोल प्रकाशन

1.	मेहरारून के दुरदसा (नाटक)	राहुल सांकृत्यायन	5 रुपया
2.	नइकी दुनिया (नाटक)	"	5 रुपया
3.	जोंक (नाटक)	"	5 रुपया
4.	अस्मिता चिन्तन (सम्मेलन के पहिलका पन्द्रह अधिवेशनन के अध्यक्षीय भाषण)	सं. आनन्द संधिदूत भगवान सिंह 'भास्कर' कृष्णानन्द 'कृष्ण'	200 रुपया
5.	भोज, भोजपुरी आ भोजपुरी (निबंध)	डॉ॰ मुरलीधर श्रीवास्तव	5 रुपया
6.	निरगुन बानी (संत कवियन के बानी के संग्रह)	सं. कुलदीप नारायण झड़प डॉ॰ शंभुशरण	20 रुपया
7.	भोजपुरी निबंध निकुंज (निबंध-संग्रह)	सं. डॉ॰ विवेकी राय सिपाही सिंह 'श्रीमंत'	50 रुपया
8.	मानक भोजपुरी वर्तनी (व्याकरण)	आचार्य विश्वनाथ सिंह	40 रुपया
9.	भोजपुरी के चुनिन्दा हाइकु (हाइकु-संग्रह)	सं. पाण्डेय कपिल	25 रुपया
10.	एक मुट्ठी लाई (लघुकथा-संग्रह)	सं. पाण्डेय कपिल कृष्णानंद 'कृष्ण'	50 रुपया
11.	भोजपुरी कहानी हाल-साल के (कहानी-संग्रह)	सं. पाण्डेय कपिल	100 रुपया
12.	धार के खिलाफ (गीत-संग्रह)	सं. पाण्डेय कपिल भगवती प्रसाद द्विवेदी	51 रुपया
13.	भोजपुरी सतसई (दोहा-संग्रह)	सं. पाण्डेय कपिल भगवती प्रसाद द्विवेदी	75 रुपया
14.	भोजपुरी के राष्ट्रीय गीत (गीत-संग्रह)	सं. सूर्यदेव पाठक 'पराग' भगवान सिंह 'भास्कर'	60 रुपया
15.	त्रिपार्श्व से (आलोचना)	सं. प्रो॰ ब्रजकिशोर जीतेन्द्र वर्मा	50 रुपया
16.	श्रीमंत (जीवनी)	सं. नागेन्द्र प्रसाद सिंह प्रो॰ ब्रजकिशोर	50 रुपया

सम्मेलन के सदस्य के आधा दाम पर मिली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
R.N.I Regd. No. 58956/90 Postal Regd. No. Pt-428/90

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका : मई, 2004

अखिलेश्वर कुमार गुप्ता प्रायोजकः

ग्राम+पोस्ट+थाना- तुरकौलिया
जिला- पूर्वी चम्पारण, (बिहार)
रूचि- लेखन आ पाठन
योग्यता बी.ए. पटना विश्वविद्यालय, बी.एड. इलाहाबाद विश्वविद्यालय
आर.एम.डब्लू.ए.पी.यू., एम.ए. पटना विश्वविद्यालय
पी.एच.-डी. पटना विश्वविद्यालय ।

चिट्ठी-पत्री

● शैलेन्द्र नाथ श्रीवास्तवः

प्रिय ब्रजकिशोर जी आशा बा मजे में होखब । एन्ने ढेर दिन से भेंट ना भइल । पत्रिका नियमित मिल रहल बिआ । बहुत धन्यवाद ।

एने भोजपुरी में कुछ कहानी लिखे के कोशिश कर रहल बानी- पहिलका ढाँचा (कथानक आ भाषा दूनो क्षेत्रन में) तूड़ के, आज के समाज, खास तौर पर शहरी समाज, आधुनिकता से प्रभावित समाज के उथल-पुथल, बदलाव, सोच, व्यवहार, संस्कार में परिवर्तन के पकड़े के कोशिश कर रहल बानी । अइसन एगो कहानी 'चुक्को-मुक्को' करीब दू साल पहिले पाण्डेय कपिल जी छपले रहलीं । फेर हम कुछ भेजबे ना कइनीं । दोसर कहानी 'अब छठ ना होई' भेज रहल बानी । देखीं, रउआ ठीक लागे, नीक लागे, त छाप देहब । गाँव से गइल, दिल्ली में बसल एगो आधुनिक नौजवान के परिवार और ग्रामीण संस्कार के बीच के संघर्ष कथा बा, छठ के प्रसंग में । पाती लिख सकीं त नीमन लागी ।

● राजेश्वरी शांडिल्यः

दिनांक 3-4 के राउर चिट्ठी मिलल । पत्रिका के तीनू अंक मिल गइल बा । का कहीं हम के बड़ा अफसोस होला कि हम एह संस्था के कवनो सहयोग नइखीं दे पावत । स्वास्थ्य निरंतर प्रतिकूल रहला से कहीं आयल-गयल संभव नइखे । केहू सहायक रहे तो लाम नीयर गइल संभव हो सकेला । जब स्वास्थ्य बीच-बीच में कुछ सुधरेला त लिखे पढ़े में मन लागेला । ढेर मेहनत करे के मन करेला आ ऊहे गान्ही हो जाला अब फिर पड़ जाइला । खैर आपन दुखड़ा का रोईं । रउवाँ सभे संस्था के खूब चलावत बानी लागल रहीं इहे हमार शुभ काम बा । समय समझी त कुछ लिखब । आ भेजब-

● गंगा प्रसाद 'अरूण':

व्यक्तिगत पारिवारिक विभागीय अस्तव्यस्तता के कारण सम्पर्क नइखे हो पावत । क्षमा करबि । पत्रिका के अंक जब जइसन हो, मिलत रहल । निमन निकल रहल बिया । सभ अंक के संपादकीय में समाइल दर्द के हम बूझत बानी । ❖

स्वत्वाधिकारी अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का ओर से प्रो॰ ब्रजकिशोर द्वारा अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, महम्मदपुर लेन, पटना-800 006 से प्रकाशित, आउर प्रो॰ ब्रजकिशोर द्वारा जे॰ एम॰ कम्प्यूटर्स, पश्चिमी लोहानीपुर, पटना-800 003 में अक्षर-संयोजित एवं मुद्रित । सम्पादकः प्रो॰ ब्रजकिशोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.